* ॐ *

सफलता की कुञ्जी

लेखक—

चन्द्रशेखर बी० ए०

ॐ

सफलता की कुंजी

अर्थात्

जीवन संग्राम में सुख और जय की प्राप्ति

लेखक

श्रीयुत चंद्रशेखर उरवंशी (बी.ए.)

प्रकाशक

नारायणदत्त सहगल ऐण्ड संन्ज़,

'आर्य्य बुक डिपो' लाहौर।

दूसरी बार १०००] [मूल्य ॥)

प्रकाशक

नारायणदत्त सहगल ऐण्ड संज़,

पुस्तक विक्रेयता, लुहारी दर्वाज़ा, लाहार।

मुद्रक

बाबू रामभेजा मल प्रोप्राइटर,

"लाहौर आर्ट विद्युत प्रैस"

अनारकली, लाहौर।

। भूमिका ।

प्यारे पाठको !

किसी जाति की उन्नति व अवनति जानने के लिए यह परमावश्यक है कि पहिले उस जाति के नवयुवकों की ओर दृष्टि डाली जावे । क्योंकि नवयुवक ही जाति के स्तम्भ हैं, जिस जाति में नवयुवकों की शारीरिक, मानसिक और आत्मिक अवस्था अच्छी है. निस्सन्देह वह जाति उन्नति को प्राप्त कर लेगी । परन्तु यहां पर हमें बड़े शोक से लिखना पड़ता है कि हमारे देश में नवयुवक दिन २ गिरते चले जाते है । जहां एक शिक्षित लोग विद्याउपार्जन में लगकर मानसिक उन्नति करते हैं, वहां वे शारीरिक उन्नति को खोकर दुर्बल और पतले हो, शीघ्र ही मृत्यु का ग्रास बनते हैं । वहां दूसरी ओर निरात्तर भट्टाचार्य्य हैं जो अपना नाम तक लिखना नहीं जानते और पशुवत् संसार में जीवन व्यतीत करते हैं ।

साथ ही हमें यह भी लिखना पड़ता है, कि इन विचारे नवयुवकों को उन्नति के लिए साधन भी बहुत कम दिए जाते हैं । वे विचारे बचपन से लेकर बुढ़ापे तक ऐसी पुस्तकों को पढ़ते रहते हैं, जिनमें उन्हें नहीं बताया जाता कि उन्हें क्या करना है ? उनके जीवन का उद्देश्य क्या है ! किस प्रकार वे संसार में उन्नति और आनन्द को पा सकते हैं ! इस पुस्तक

में हमने प्यारे भावी नवयुवकों के लिए पुशिंग टू दी फ्रन्ट Pushing to the front आदि पुस्तकों से ऐसी २ बातें रक्खी हैं, कि जिन पर वे कार्य करके शीघ्र ही उन्नति को पा सकते हैं। इस पुस्तक में पश्चिमी और पूर्वी दोनों दिशाओं के महा पुरुषों के दृष्टांत देकर प्रत्येक बात को भली भांति दर्शाया है। जो कि बच्चों तक को भी बड़ी रोचक और प्रिय लगें। और उन्हें शिक्षा भी मिल जावे।

आशा है; कि देश के प्रेमी, और जाति के उन्नति चाहने वाले पुरुष इस छोटी सी पुस्तक को स्वयम् पढ़ कर और अपने पुत्रों और भाइयों को पढ़ा कर मेरा उत्साह बढ़ावेंगे।

चन्द्रशेखर

सफलता की कुंजी

प्रथम–प्रकरणम्

सुशीलता

तुलसी मीठे बचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर ।
वशीकरन एक मंत्र है, तज दे बचन कठोर ॥

(शीलम् परम् भूषणम्)। (भर्तृहरी)

शीतलता के तीन बड़े अङ्ग हैं सम्भाषण, नम्रता और सर्वप्रियता

संध्या समय है, रक्तवर्ण को धारण करते हुए सूर्य नारायण मँदराचल में अस्त होते चले जाते हैं, बात की बातमें चारों ओर अँधेरा छा जाता है । इधर श्रीरामचन्द्रजी

लक्ष्मण सहित सीता जी की खोज में चारों ओर जंगल में भटकते हुए एक पहाड़ी के नीचे आपहुँचते हैं, रात हुई जान, यहां श्रीरामचन्द्र जी ने लक्ष्मण जी से कहा—भाई, जाओ यहां एक पहाड़ी पर एक महात्मा की कुटी है, उन से रात भर वहां विश्राम करने की आज्ञा ले आओ ! लक्ष्मण जी तुरन्त ही भाई की आज्ञा पाकर ऊपर चढ़ते हैं और आगे जाकर क्या देखते हैं कि एक साधू धूनी लगाए हुए परमात्मा के भजन में मग्न हो रहा है, लक्ष्मण जी ने हाथ जोड़ कर प्रार्थनां की—महाराज ! श्रीरामचन्द्र जी ने मुझे आप के पास भेजा है यदि आज्ञा हो तो आज रात को हम दोनो आप के चरणों में ही निवास करें ॥

यह सुन कर महात्मा ने आंख उठा कर लक्ष्मण जी की ओर देखा। इस के पश्चात् जीभ पर एक तिनका रक्खा और एक हाथ से लंगोट पकड़ कर, दूसरे हाथ के सहारे से चारों ओर एक चक्कर लगा लिया । और फिर अपने ध्यान करने में लग गए। लक्ष्मण जी थोड़ी देर तक वहीं खड़े रहे पर अंत में थक कर वह लौट आए श्रीरामचन्द्र जी ने उन्हें आते देख पूछा। कहो—भाई साधू ने क्या कहा, इस पर लक्ष्मण जी ने धीरे से कहा—भाई उन्होंने तो कुछ भी नहीं कहा उन्होंने केवल एक बार मेरी ओर देखा था। इस पर रामचन्द्र जी ने कहा क्या उन्होंने कुछ संकेत आदि भी नहीं किया ? इस पर लक्ष्मण जी ने कहा—हां उन्होंने कुछ ऐसा किया था कि एक

तिनका उठाकर जीभ पर रख लिया था और एक हाथ से लंगोट पकड़ कर दूसरे हाथ के बल एक चक्कर लगा लिया था। यह सुन श्रीरामचंद्र जी कुछ सोच में पड़ गए और फिर उन्होंने कहा—हां भाई, उन्होंने ठीक कहा, तुम उनका तात्पर्य्य नहीं समझे। देखो जीभ पर तिनका रखने का भावार्थ यह है कि जिसने जीभ को रोक लिया है या वश में कर लिया है, लंगोट पकड़ने का तात्पर्य्य यह है कि जिसने इंद्रियों का निग्रह कर लिया है [इनको थाम लिया है] । और चक्कर लगाने का तात्पर्य्य है कि सारे भूमण्डल पर, क्योंकि पृथिवी गोल है, कुल प्रयोजन वा अर्थ यह है कि भाई जिसने अपनी जीभ को रोक लिया है, इंद्री को अपने वश में कर लिया है उसके लिए सारे भूमण्डल पर ठहरने को कहीं भी मनाही नहीं है। सच है :—

जीभ के रोकने और इन्द्रियों को वशमें करने वाले के लिए कहीं भी ठहरने के लिए रोक टोक नहीं है।

एक समय पूर्वी प्रचण्ड वायु ने प्रातःकाल की मंद मंद शीतल पवन को पूछा—क्या तुम मेरी जैसी शक्ति चाहती हो क्यों, जब मैं चलना आरम्भ करती हूँ समुद्रों के किनारे मेरा स्वागत करना आरम्भ कर देते हैं। मैं जहाज के कूपदण्ड [मस्तूलों] को ऐसी सहजता से तोड़ मोड़ सकती हूँ जैसे कि तुम सूखे पत्तों को उड़ा सकती हो, मैं अपने पंखों की

फड़फड़ाहट से सारे समुद्री किनारों को जहाज़ों के तख्तों की लकड़ियों से भर सकती हूँ। मैं ने कई बार अटलांटिक महा सागर को उभारा है और अब भी उभार सकती हूँ। मैं दुर्बल और रोगियों के लिए हउआ हूँ। उन्होंने मुझ को हड्डियों में चुभने से रोकने के लिए जँगलों के सारे वृक्ष काट डाले हैं और सारे महाद्वीप की कोयले की खानों को भट्टियों की भेंट करने के लिए ढूंढ मारा है। मेरे नीचे सांस लेते २ जातियां मरघटों में पहूँचती हैं। क्या तुम नहीं चाहतीं कि तुम में भी मेरी जैसी शक्ति होती ?॥

प्रातः काल की वायु ने कुछ उत्तर नहीं दिया और आकाश मण्डल से चलना आरम्भ कर दिया। सारी नदियां, झीलें और समुद्र सारे जंगल और खेत और सारे पशु पक्षी और मनुष्य इस के अगमन से हंसने लगे। वन, उपवन, और वाटिकाओं के फल फूल पकने लगे। रूपहरी गेंहू बेभरके खेत में सुनहरी होकर चमकने लगे छोटे २ बादल आकाश में उमड़ने लगे, पक्षियों के पर और जहाज़ों के पतवार धीरे २ आगे को बढ़ने लगे और आरोग्यता और आनन्द के चिन्ह चारों ओर छा गये। इस प्रकार कोमल २ मृदु-पत्तियां, फल,फूल और फसल उष्णता और चिलमिलाहट आनन्द, सौंदर्य्य और जीवन द्वारा ही प्रातःकाल की शीतल मन्द सुगन्ध वायु ने पूर्वी आंधी के धूर्त प्रश्नों का उत्तर दिया

प्रातःकाल की वायु की भान्ति सुशीलता के तीन बड़े गुण वा अंग हैं—शीतल मन्द सुगन्ध।

यह कहा जाता है कि एक बार महाराणी विक्टोरिया ने अपने पति राजकुमार अलबर्ट से वार्त्तालाप करते समय अपने आपको बड़ा और उच्चतर समझकर कुछ ऐंठ भरे शब्दों में प्रकाशित किया इस पर राजकुमार स्वयं मान को सुरक्षित रखने के लिये अप्रसन्न होकर अपने कमरे में एकान्तस्थान को चले गये और भीतर से कमरे की किवाड़ें बन्द करलीं पांच मिनट के पश्चात विक्टोरिया ने किवाड़ों को आ खटखटाया ॥

राजकुमार ने पूछाः—कौन है ?

"मैं हूं इंगलैंड की महारानी किवाड़ें खोलो" ! चंचलता विक्टोरिया ने कहा—

राजकुमार ने कुछ उत्तर नहीं दिया। बड़ी देर के पीछे फिर धीरे से किवाड़ खटखटाने का शब्द सुनाई दिया और धीरे से आवाज़ आई, किवाड़ खोलिए. मैं हूँ आपकी पत्नी दासी विक्टोरिया ॥

यहां पर यह लिखने की अब आवश्यकता नहीं कि तुरन्त किवाड़ खोल दिए गए और दोनों की अनबन तुरंत ही दूर हो गई ॥

यह सर्वत्र प्रसिद्ध है कि जैसी स्त्री के लिए सुंदरता है, मनुष्य के लिए ठीक वैसी सुशीलता है। यह तुरंत दूसरे पर अपना प्रभाव डालती है॥

अंग्रेजों में एक गाथा प्रसिद्ध है कि वासले नाम का एक पुजारी (monk) अपने महन्त (pope) के अभिश्राप के समय में ही मर गया। इस पर यम ने उसे एक देव के पास भेज दिया और कहा गया कि इस के लिए पाताल लोक में यथोचित स्थान देखा जावे। परँतु वह ऐसा शांत नम्र और रोचक स्वभाव वाला था जहां कहीं वह गया वहीं उसने अपनी मित्र मँडली बनाली॥

यम के भेजे हुए बहुत से दानवों ने उसके स्वभाव और बर्ताव को धारण कर लिया। और बहुत से देव भी उस के देखने व उसके संसर्ग करने के लिए इतना बड़ा मार्ग तै कर के स्वर्ग से पाताल लोक में आए। इसके अनंतर वह पाताल लोक के गढन से गहन गड्हे में भेजा गया वहां भी उस का वही हाल हुआ। उसकी स्वाभाविक शीलता और हार्दिक रोचकता प्रत्येक के ऊपर प्रभाव डालती थी और ऐसा प्रतीत होता था; कि वह मानो नर्क को भी स्वर्ग बना लेता है। अंत में वह देव उसे यम के पास लौटा लाया और कहने लगा, इन को तंग करने के लिए मुझे कोई भी स्थान नहीं मिलता। यह वैसा का वैसा ही अब तक बना है। इस प्रकार उसका अपराध

क्षमा कर दिया और महात्मा बना कर स्वर्ग में भेज दिया गया।

ह्यूमार्थोरो कोई बड़ा भारी विद्वान् नहीं था, वह अँग्रेजी बड़ी अशुद्ध और भद्दी लिखता था, परंतु उस ने बड़े २ राज सिंहासनों को हिला दिया था। उसका बर्ताव का ढंग ऐसा प्रभावशाली था कि रोके नहीं रुक सकता था। उसकी मनोहर मुसकराहट सुललित वक्तृता, उसकी ओर घोर घृणित दृष्टि रखने वाले को भी विवश कर देती और बड़े से बड़े शत्रु को भी अपना लेती थी।

न्यूयार्क में रहने वाली एक स्त्री फिलेडेलफिया को जाने वाली गाड़ी में सवार हो गई। पास ही एक हृष्ट पुष्ट आदमी बैठा था। ज्यों ही इसने अपनी सिगरेट जलाई त्यों ही यह स्त्री खांसने लगी और फिर कुछ वहां से एक ओर को सरक गई। परंतु इन बातों ने उस मनुष्य के ऊपर कुछ प्रभाव न डाला। इस पर उसने झुंझला कर कहा—महाशय जी! शायद आप विदेशी हैं, क्या आप नहीं जानते कि इस गाड़ी में तम्बाकू पीने के लिए अलग कमरा बना हुआ है। यहां पर तम्बाकू पीने की आज्ञा नहीं है। इस मनुष्य ने उत्तर तो कुछ नहीं दिया, परन्तु अपनी सिगरेट बाहर फैंक दी। थोड़ी देर में ही गाड़ी के संरक्षक ने आकर कहा—देवी! आप इस कमरे में क्यों आ बैठी हैं, यह तो सेनानायक (जनरल) ग्रांट का प्राइवेट कमरा है। यह सुनते ही इस स्त्री की बोलती बंद हो गई, और घबराहट के मारे इस नायककी ओर देखती हुई शीघ्रता के साथ

कमरे के बाहर उतर गई। यदि जनरल चाहता तो उसे तुरंत ही उठा ही न देता बल्कि इतने कहने पर तो मार देता। परंतु बड़े आदमी सुशील होते हैं, और जिस शीलता ने उसके हाथ में से सिगरेट फिकवा दी थी, उसी ने ही इस स्त्री की जान भी बचा दी।

महारानी विक्टोरिया ने कारलाइल को जो स्कोटलैंड का किसान था, आर्य्य का पद (Title of nobleman) देने के लिए बुलाया। उसने इस पद को स्वीकार नहीं किया क्योंकि वह समझता था कि मैं पहिले से ही आर्य्य पुरुष हूँ। यह कारलाइल राज-सभा के नियमों और वर्ताओं से निरंतर अनभिज्ञ था और कुछ मिंटों तक वार्त्तालाप करने के पश्चात् उसने थककर कहा—देवी! देवी! आओ बैठ जावें। इस पर राज-सभा के कुछ लोग बिगड़ने लगे। परंतु विक्टोरिया एक सच्ची सुशील देवी थी तुरंत ही उसने उन लोगों को आंखें दिखा दीं। महारानी विक्टोरिया में यदि सब से बड़ा गुण था तो केवल सुशीलता ही थी। इस मृदु-भाषण नम्र-वर्त्ताव और रोचकता ने उन्हें केवल इंगलैंड वालों की ही नहीं बल्कि केनेडा आस्ट्रेलिया और भारतवर्ष वालों की भी सर्व-प्रिया बना दिया था, इसी कारण से सारी प्रजा उन पर जान निछावर करने को उद्यत रहती थी॥

बड़ों का बड़प्पन केवल सुशीलता में ही है।

बहुत से मनुष्यों के पास एक ऐसा राज-दण्ड [आसा] होता है कि जिसके सामने सब सिर झुकाते हैं। पर कहां से यह जादू की सी शक्ति आती है? इस में क्या रहस्य है जो सब मनुष्यों को अपने वश में कर लेता है। ऐसे राज-दण्ड [आंसा] के लिए हमें सब कुछ दे देना चाहिए।

यह राज-दण्ड सुशीलता का आसा है, जिसके सामने सब सिर झुकाते हैं॥

अच्छा वर्ताव और नम्रता सम्पूर्ण ऐवों और बुराइयों को ढांप देती है। सब से सुंदर मनुष्य वह नहीं है. जो सब से अधिक स्वरूपवान हो, बल्कि वह है जो वर्ताव करने में सब से अच्छा हो। यूनान के निवासियों का यह मत था कि सुंदरता उनके देवताओं की प्रसन्नता का एक विशेष चिह्न है। परंतु वे प्रतिष्ठा और मान के योग्य उसी सुंदरता को मानते थे, जो क्रोध ईर्षा आदि से नष्ट नहीं की गई हो उनके आदर्श के अनुसार सुंदरता के अंतर्गत प्रसन्न-चित्तता, संतोष, सम्भाषण प्रेम और दया भाव जैसे मनोहर गुण भी होने चाहिए॥

जीवन की सौंदर्यता और सदाचार में सुंदर चित्र की भांति नोकीले और पैने कोण नहीं निकलते होते। इस की रेखायें लगातार एक सी चली जाती हैं और टेढ़ी रेखायें भी एक दूसरे से मिल कर ठीक बन जाती हैं हमारे जीवन में

इधर उधर की तेज नोकें ही हैं जो आत्मा को सुंदर होने से रोकती हैं ! जो कुछ अच्छा व शुभ काम हम करते हैं वह कुसमय में, अनुचित स्थान में, और धूर्तता चिढ़चिढ़े पन से किए जाने से बहुत कम अच्छा रह जाता है । बहुत से स्त्री पुरुष अच्छे वर्ताव और स्वच्छता से अपने प्रभाव को दूसरों पर दूना कर सकते हैं ॥

एक सूक्ष्म दर्शी का कथन है कि कुत्ते के सामने दूर से रोटी का टुकड़ा फेंक दो, वह तुरंत ही विना पूँछ हिलाए ही उसे मुँह में दबा कर भाग जायगा परंतु कुत्ते को अपने पास बुलाओ उसके सिर पर हाथ फेरो और फिर हाथ से उसके मुँह में रोटी दे दो या हाथ में से उसे ले लेने दो, तो उसकी पूँछ धन्यवाद और कृतज्ञता के मारे अपने आपही हिलने लगेगी। क्योंकि कुत्ता उसके इस भले वर्ताव और शीलता को पहिचान लेता है, इस लिए उस मनुष्य को जो किसी शुभ कार्य को रोटी की तरह दूर फैंक देता है कभी यश कीर्ति या कृतज्ञता भरी मुसकराहट की आशा नहीं करनी चाहिए ॥

स्कोटलैंड निवासी डाक्टर गुथरी (Gutherie) कहता है. रोम में किसी को रास्ता पूँछिए वह तुरंत ही बड़ी नम्रता से मार्ग वतला देगा। परंतु आप अपने देश में किसी से रास्ता पूछिए तो वह दूर से ही कह देगा "चले जाओ सीधे नाक की सीध चले जाओ तुम्हें रास्ता मिल जाएगा" परँतु यह

तुम्हारी ऊँची जातियों के दोष हैं और यही कारण है कि इस देश की छोटी २ जातियां नम्र और शांत स्वभाव की नहीं होती क्योंकि ऊँची जातियां ऐसा वर्ताव नहीं करतीं। मुझे भली भांति स्मरण है कि जब मैं पहिली बार पैरिस में गया था तो मैं बड़ा अचँभित हुआ था। पहिली रात को मैं एक बैंकर के पास ठहरा था, वह मुझे अपने आश्रम को ले गया। जब हम वहां पर पहुँचे तो द्वार पर एक दासी आई इसे देख कर उस बैंकर ने टोपी उतार कर नमस्ते की और उसे इस भांति से बुलाया कि मानो वह घर की स्वामिनी थी। क्योंकि वहां की जातियां ऐसी नम्रता और सुशीलता से वर्ताव करती हैं, इसी कारण से वहां की छोटी २ जातियां भी नम्र और सुशील होती हैं॥

सुशीलता स्वयम् ही एक बड़ा सौभाग्य है, सुशील पुरुष विना धन के ही बड़े २ कार्य कर सकता है। इसके लिए कहीं पर जाने के लिए रोक टोक नहीं प्रत्येक स्थान पर इस के लिए द्वार खुले हुए हैं और विना कुछ व्यय किए वह चाहे जहां जा सकता है। विना मोल लिए हुए ही वह प्रत्येक वस्तु का आनंद उठा सकता है। सूर्य के प्रकाश की भांति उन का घर २ में स्वागत होता है। हर एक स्थान पर उन्हें सुख और आराम मिलता है। वह ईर्षा और डाह को शस्त्र हीन कर देते हैं, क्योंकि वह प्रत्येक मनुष्य के लिए हितकारक

होते हैं। जिन मनुष्यों के ऊपर शहद लगा होता है उन्हें शहद की मक्खियां कभी नहीं काटतीं ॥

एक सच्चा सत्पुरुष उन अवगुणों को कभी नहीं धारण कर सकता जो दूसरों के लिए शत्रुभाव, ईर्षा. डाह और द्वेष-भाव उत्पन्न कर देते हैं क्योंकि यह आत्मिक जीवन के लिए विष के तुल्य होते हैं और आत्मा को संकुचित कर देते हैं। सुशील मनुष्यों के लिए हार्दिक उदारता और सच्ची शुभ कामना अत्यंत आवश्यक है।

दो सहस्र वर्ष हुए कि ऐरिस्टोटल (Aristotle) ने सच्चे आर्य की व्याख्या इस भांते की थी, आर्य वह महानुभावी है जो सौभाग्य और दुर्भाग्य दोनों में समवृत्ति से वर्ताव करता है, वह कभी अपने आप को उन्नत नहीं होने देता और न कभी दूसरों को मान भंग करने का अवसर देता है। वह न तो उत्तीर्णता पर प्रसन्न होता है और न निरुत्तीर्णता पर शोक करता है। वह कभी झगड़ों से प्रसन्न नहीं होता और न स्वयं उन्हें टटोलता फिरता है। उसे परवाह नहीं कि लोग उसकी बढ़ाई कर रहे हैं या बुराई ॥

सुशीलपुरुष एक सुशील पुरुष ही है वह इस से अधिक अथवा न्यून नहीं है। सुशील पुरुष सदैव शीलवान लज्जावान और सुचरित होते हैं। वे कभी चिढ़ते नहीं और न किसी को चिढ़ाते हैं। वह बुराई के बीज नहीं बोते क्यों वे इसे

अपने पास फटकने ही नहीं देते वह अपनी आवश्यकताओं को अपने हाथ में रखता है स्वादों का सदैव संशोधन करता रहता है और इंद्रियों का निग्रह करता है। वह वशीकरण मंत्रको भली भांति जानता है संपूर्ण मनुष्यों को अपने समान व अपने से बढ़कर अच्छा समझता है। क्योंकि उसका तो सिद्धांत है:—

बुरा जो देखन को चला, बुरा न दीखा कोय।
जो दिल खोजा आपना, तो मुझ से बुरा न कोय॥

एक सच्चा सुशील पुरुष वह है जो सब कुछ नष्ट होजाने पर प्रसन्न वदनता, साहस, आशा, नेकी और स्वयंभाव को धारण रखता है। ऐसा पुरुष न कुछ होने पर भी धनवान है॥

कोई पुरुष इस बात को पूर्णतया से नहीं समझ सकता कि मनुष्य के जीवन में सुशीलता का कितना बड़ा भारी अंश है अच्छे वर्ताव उत्तम प्रकृति के फल हैं। वर्ताव ही मनुष्य को रँज में डाल देते, और प्रफुल्लित कर देते हैं। यह ही उठाते गिराते सभ्य और असभ्य बनाते हैं। यह ही वायु की नाईं जिस में हम सांस लेते हैं स्थिर, एक रस और विचार, शांति और अशांति प्रदान करते हैं। शारीरिक बल शीलता की आधी भी शक्ति नहीं रखता। यह वह दिव्य तेल है जो हमारे पारस्परिक सम्बन्धों को स्निग्ध (चिकना) कर देता है और समाज रूपी मशीन को बिना संघर्षण (रगड़) के चलने के योग्य बनाता है॥

सुशीलता के समान अन्य कोई वैदग्धत (Policy) नहीं है, क्योंकि जहां पर मीठा २ सम्भाषण भी सफल नहीं होता, वहां सुशीलता और नम्रता, सफलता को प्राप्त कर लेती है। संसार में दूसरों को प्रसन्न कर लेने की ही कला उन्नति की ओर ले जाने वाली है।

एक विद्वान् का कथन है कि चिकने (सुशील) और नम्र होने पर मनुष्य बँदूक की गोली की नाईं आगे को बढ़ते हैं। नेपोलियन, यह सुन कर कि, उसकी धर्मपत्नी जोसेफाइन ने जनरल लोरेज को जो एक बड़ा सुँदर नवयुवक था अपने पास आसन पर बिठा लिया है, बड़ा अप्रसन्न हुआ। इस पर जोसेफाइन ने मीठी बोली से उसे शांत करके कहा—स्वामिन्! यह जनरल लोरेज़ नहीं था बल्कि आपकी सेना का बुड्ढा जनरल (सैना नायक) था, वह राज-सभा के बर्तावों से नितांत अनभिज्ञ था। मैं नहीं चाहती थी कि उस सच्चे नायक का दिल दुखाऊँ और इस लिए मैंने उसे वहां बैठे रहने दिया इस पर नेपोलियन बड़ा प्रसन्न हुआ और उसकी सुशीलता की प्रशंसा करने लगा। इसी सुशीलता से जोसेफाइन ने सारे फ्रांस निवासियों पर अपना प्रभाव डाल दिया था और इस के कारण प्रजा के लोग और सिपाही उसे नैपोलियन से भी अधिक चाहते थे।

अमरीका के राज्याधिपति (प्रेज़ीडेंट) जफेरसन एक दिन अपने नाती के साथ घोड़ों पर चढ़े हुए जा रहे थे। मार्ग में उन्हें

एक गुलाम मिला, उसने इन्हें देखते ही अपना टोप उतार सिर झुका कर प्रणाम किया। प्रेसीडेंट ने भी इसके प्रणाम को स्वीकार करने के लिए अपना टोप उतार लिया। परंतु उस के नाती ने कुछ भी नहीं किया। इस पर उसने अपने नाती से कहा—थोमस, क्या तुम इस गुलाम को अपने से अधिक सुशील बनने देते हो! देखो, बड़प्पन इस बात में नहीं है कि तुम छोटे २ आदमियों को अकड़ दिखाओ परंतु बड़प्पन इस बात में है, तुम प्रत्येक से नम्रभाव से बर्ताव करो। देखो बबूरका पेड़ ज्यों २ बड़ा होता जाता है त्यों २ अकड़कर सतर हो जाता है, परंतु आम का पेड़ जब उस पर फल आते हैं झुकजाता है। इस लिए तुम्हें चाहिए कि बड़ा होकर छोटे २ आदमियों के साथ नम्रता करो, और किसी आदमी को जिसे तुम अपने से छोटा समझते हो उसे अपने से अधिक सुशील न होने दो।

अपने घर पर तुम इस प्रकार से भोजन करो जैसे कि तुम मानो राजाओं के यहां पर पांति खा रहे हो, यदि माता पिता अपने बच्चों के बर्ताव के विषय में घर पर वे परवाही नहीं करते हैं तो वे कदाचित बाहर अपने बर्ताव से दूसरों को हँसने का अवसर न देंगे। उत्तम पुरुष छोटे२ आदमियों के साथ सज्जनता के साथ बर्ताव करते हैं कि मानो वह किसी बड़े रईस वा लार्ड के साथ बर्ताव कर रहे हैं निर्धन से निर्धन और नीच से नीच पुरुष से इस नम्रताके साथ बातें करते हैं कि मानों वे उससे भली भांति जान पहिचान रखते हैं॥

एक तंग गली के कोने में से एक स्त्री बड़ी तेजी के साथ दौड़ी चली जा रही थी। एकाएक उसके दौड़ने से एक निर्धन भिकारी लड़के के ऐसा धक्का लगा कि वह गिरते २ बच गया। यह देख कर वह स्त्री एक दम रुक गई और लौट कर बड़ी नम्रता के साथ उस लड़के से बोली:—मेरे प्यारे नवयुवक! मुझे बड़ा रंज है कि आपके धक्का लग गया। कृपया मेरा अपराध क्षमा कीजिए। यह सुनकर लड़का उस की ओर देखने लगा और फिर हँस कर उस से कहने लगा। क्या आप मुझ से क्षमा चाहती हैं, आप की वाणी मुझे ऐसी प्रिय लगती है कि यदि मुझे आप धक्का मार कर गिरा भी दें तो भी मैं कुछ नहीं कहूंगा। जब वह स्त्री चली गई तो उसने अपने एक साथी से कहा–भाई यह पहिला ही अवसर है कि जब किसी ने मुझ से क्षमा मांगी है, आज से पहिले मैं नहीं जानता था कि मीठी बोली में क्या शक्ति है।

संसार में बड़े २ मनुष्य प्रत्येक के लिए नम्र और शांत होते हैं। ईसा अपने फांसी देने वाले को भी सुशील था और घोर क्लेश और दुःख में भी सूली के ऊपर से उसने चिल्लाकर कहा–"ओ पिता परमेश्वर! क्षमा कर इन लोगों को, क्योंकि ये नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं"।

अच्छे बर्ताव बहुधा नवयुवकों को सौभाग्य सिद्ध होते हैं एक समय मिस्टर बटलर, जो एक बड़ा भारी सौदागर था

अपनी कोठी बन्द करके घर को जा रहा था। मार्ग में उसे एक छोटी सी लड़की मिली और उसने कहा—महाशय जी! मुझे एक रील का हुचका चाहिए। वह लौट कर तुरन्त ही चला आया और उसे हुचका दे दिया। इस छोटी सी बात की चारों ओर चर्चा फैल गई और लोग कहने लगे देखो मिस्टर बटलर कैसा शील स्वभाव का आदमी है कि वह छोटी सी वस्तु के लिए रास्ते से लौट आया। चलो उसी के से सामान मोल लिया करेंगे। इस प्रकार उसके पास सैकड़ों ग्राहक आने लगे। और वह थोड़े ही दिनों में बड़ा धनाढ्य हो गया। सुशीलता मनुष्य के लिए क्या नहीं करती।

बाल्टी मोर का निवासी रोम बिन्लस देशियों के साथ नम्रता के साथ वर्ताव करने से ही बड़ा भारी धनाढ्य मनुष्य हो गया। यद्यपि उसकी फैक्टरी कला-भवन (कार्य्यालय) चौथे दर्जे की थी, परन्तु जो कोई भी उसे देखने आता था उसे वह बड़ी नम्रता के साथ दिखलाता था। एक बार दो अनजाब आदमी उस शहर में आए और उन्होंने वहां की बड़ी बड़ी फैक्टरियों को देखा परंतु उनके प्रबंध कर्त्ताओं ने उन्हें झटपट अच्छी तरह बिना दिखाए ही टाल दिया जब वे इस फैक्टरी में आए तो इस ने उन्हें एक २ छोटी वस्तु भी बड़ी अच्छी तरह दिखलाई। यह दोनों आदमी रूस के ज़ार की ओर से भेजे हुए थे। वह इस मनुष्य के वर्ताव से बड़े प्रसन्न हुए।

फिर क्या था, इनके कहने से रूस के सम्राट ने इसी विनिन्स को अपने यहां पर कलें लगवाने के लिए बुलाया और इस तरह से सहस्रों रुपये वार्षिक वह उत्पन्न करने लगा। जब कि दूसरे अच्छे फैक्टारियां होते हुए भी इस अवसर को न पा सके सच है. धन कमाने के लिए भी सुशीलता और नम्रता बड़े साधन हैं ॥

एक मनुष्य कई वर्षों के पर्यन्त न्योयोर्क को लौट कर जा रहा था, इस ने पूछा-मेरा मित्र व्यापार में सफलता प्राप्त क्यों नहीं करता । उसके पास काफी रुपया है, व्यापार को भी भली भांति जानता है। उस में दूर दर्शिता और बुद्धिमता भी है। उधर से उत्तर आता है। हां उस में ये सब बातें हैं परन्तु एक बड़ा भारी ऐब है जो इन सब गुणों पर पानी फेर देता है। वह यह है कि वह चिढ़चिढ़ स्वभाव का है। वह सदैव अपने काम करने वालों के ऊपर संदेह ही करता रहता था और ग्राहकों से नम्रता पूर्वक वर्ताव नहीं करता। इसलिए कोई भी आदमी जी लगा कर उस का काम नहीं करता और ग्राहक उस दुकान पर चले जाते हैं जहां उन्हें यह आशा है, कि उनके साथ नम्रता और शीलता पूर्वक वर्ताव होगा।

बहुत से लोग दिन रात काम में लगे रहते हैं और अपने सुख और आराम को भी तिलांजुली दे देते हैं ताकि उन्हें व्यापार में लाभ होवे परन्तु उन्हें कभी भी सफलता प्राप्त

नहीं होती, कारण यह है कि वह सुशील और नम्र नहीं होते इसी कारण से लोग उन से सम्बंध नहीं करते और व्यापार उन लोगों के हाथ में जो अधिक नम्र होते हैं चला जाता है बुरा वर्ताव धन, परिश्रम होने पर भी सब पर पानी फेर देता है और सहन-शीलता अवगुणों के होते हुए भी सफलता प्राप्त कर लेती है । दो मनुष्य जो सब वातों में बराबर हैं। यदि इन में से एक नम्र, शांत और सहनशील है और दूसरा चिढ़चिढ़ा, तुन्द और धूर्त्त है इन में से पहिला तो शीघ्र ही धनवान हो जायगा और दूसरे को शीघ्र ही भूखों मरने की नोवत पहुँचेगी ॥

सुशीलता से व्यापार में बड़े २ लाभ होते हैं, पेरिस में एक भारी कार्य्यालय था, इस में सैकड़ों मनुष्य काम करते थे, इस के स्वामी ने अपने कारखाने के दो बड़े नियम बना लिए थे ॥

१—थोड़े मूल्य पर वस्तु वेचना । २—ग्राहकों के प्रति नम्रता के साथ वर्ताव करना। वह अपने आदमियों से सदैव कहता रहता था कि केवल सुशीलता ही काफी नहीं है दुकानदार को ग्राहकों के साथ ऐसा वर्ताव करना चाहिए कि उन्हें यह प्रतीत होवे कि वह घर पर बैठे हुए हैं। दुकान पर उन्हें कोई न कोई ऐसी रोचक वात अनुभव होनी चाहिए ताकि उन्हें दुकान की बड़ी देर याद रहे। ऐसा करने से यह

कार्य्यालय इतना बढ़ गया कि संसार में वह अनुपम कार्यालय हो गया॥

बहुत से लोगों में इतनी व्रीड़ा (Shyness) होती है, कि वह उनके बहुत से कार्य्यों में बाधा डालने लग पड़ती है। ऐसे मनुष्य कदापि अपनी शक्तियों पर भरोसा नहीं रख सकते हैं। कभी २ यह अवगुण महापुरुषों में भी हो जाता है जिसके कारण बहुत दिनों तक उनकी अद्भुत शक्तियां गुप्तही रहा करतीं हैं। न्यूटन जैसे महानुभावों में भी पहिले यह एब था और जिसके कारण बहुत दिनों तक उसने अपने आविष्कारों को लोगों में प्रकाशित नहीं किया, जब किया तो उन्हें अपना ऐब नहीं बतलाया। वाशिंगटन भी पहिले बड़ा शालीन (Shy) था और इस क कारण पहिले से ही वह देश की सेवा आरम्भ न कर सका।

वह लोग जो दिन रात अपने विषय में विचारते रहते हैं और सोचते रहते हैं कि अन्य मनुष्य उनके बारे में क्या कहते हैं। प्रायः शालीन (Shy) होते हैं॥

सिडिनी स्मिथ कहा करता था कि पहिले मैं बड़ा शालीन था। परन्तु पीछे से मैंने दो बातें अन्वेषण करलीं। १—संसार केवल मेरी ओर देखने में ही नहीं लगा हुआ है। २—व्रीड़ा (शर्म) करने से कुछ लाभ नहीं होता। संसार बड़ा दूरदर्शी है, वह शीघ्र ही मनुष्य की सच्ची योग्यता जान लेता है, बस

जब मुझे यह ज्ञात हो गया तो झट मेरी वह बीमारी दूर हो गई ॥

सुंदर वस्त्रों का धारण करना एक अच्छी बात है। परन्तु इस छोटे दर्जे की सुन्दरता के लिए उच्च पद की सुन्दरता को तिलांजुलि नहीं देना चाहिए, शालीन मनुष्य वस्त्रों का अधिक ध्यान रखते हैं और इस के लिए धन धान्य सब कुछ लगा देते हैं। व अपने सदाचार की अपेक्षा वस्त्रों का अधिक ध्यान रखते हैं। और ऊपरी बातों के करने में अपने धर्म कर्म को भूल जाते हैं।

प्रत्येक समाज में ऊपरी वस्त्र आभूषणों से हमारी अधिक प्रतिष्ठा होती है। उस मनुष्य का जो अच्छे २ सुन्दर वस्त्र पहिनता है मैले कुचैले कपड़े पहिनने वालों की अपेक्षा अधिक स्वागत किया जाता है परमात्मा सदैव सुन्दरता को और स्वच्छता को पसंद करता है। उसने प्रत्येक वस्तु को सुन्दरता और मनोहरता सम्पन्न बनाया है। देखो प्रत्येक फूल कैसा सुन्दर होता है। छोटे २ पक्षी रंग बिरंगे परों और आंखों को धारण किए हुए चित्त को मुग्ध कर देते हैं! जहां दृष्टि डालो वहीं प्रकृति माता अपना मनोहर सौंदर्य्य दिखलाती है परन्तु प्यारे पाठको! फूलों की सुंदरता को कोई नहीं पूछता यदि उनमें सुगंध नहीं हो, इसी प्रकार मनुष्य चाहे कैसा ही सुंदर क्यों न हो, पर यदि उस में शीलता रूपी सुगंधि ने

हो तो उसे टेसू के फूल की नाई कोई नहीं पूछता। जैसा कि—

रूप जवानी से भरे कुल विशाल संबध ।
शील विना नहिं शोभते ज्यों केसर विनु गंध ।।

इस लिय मनुष्य को सदैव इस वातका ध्यान रखना चाहिये कि वह कहां पर किस से और क्या वात कह रहा है। क्योंकि हमारे वर्त्तावों की प्रत्येक स्थान पर जहां कहीं हम जाते हैं जांच की जाती है। लोग हमारे ऊपर सम्माति वांधते हैं। छोटी २ वातें भी अंकित की जाती हैं। प्रत्येक मनुष्य जो हमें देखता है वह अपने मन में प्रश्न करता है कि क्या यह ऊपर की ओर चढ़ता है या नीचे की ओर गिर रहा है। यह शीलवान, विचारवान, सदाचारी और वुद्धिमान है या वेपरवाह धूर्त्त और कमीना है, इस लिए कहीं हम जावें वहीं सदैव वार्ताओं को ध्यान में रक्खें। कभी यह विचार नहीं करना चाहिए कि हमें कोई नहीं देखता है। स्मरण रक्खो प्यारे पाठको! संसार में मनुष्य को यदि कोई उच्च बनाने वाला वस्तु है तो वह धन नहीं है, वल नहीं है, सुंदरता नहीं है, वरन् केवल सहन शीलता है, पुराणों की एक गाथा इस वात को क्या ही अच्छी तरह से सिद्ध करती है।

एक समय सारे देवता इकठे हुए, उनमें यह प्रश्न उठा कि वताओ भाई तीनों देवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) में सब से बड़ा कौन है? एक ने कहा—ब्रह्मा सब में बड़ा है, भला देखो

तो सही वह बात की बात में सारे ब्रह्मांड को रच देता है। यह बड़े २ डरावने पहाड़, यह लम्बी नदियां, यह विशाल समुद्र, यह रङ्ग विरङ्गे पत्ती यह सब से उत्तम पुरुष उसने एक क्षण में ही रच डाले हैं। फिर कहो उस से बड़ा और कौन हो सकता है॥

दूसरा बोला—नहीं, ब्रह्मा क्या है ? महादेव सब में बड़ा है भला बताओ तो सही, ब्रह्मा ने तो इस संसार को बना कर रचा, परन्तु उस में बल ही कुछ नहीं. महादेव उसे एक क्षण में नष्ट भ्रष्ट कर डालता है। जब प्रलय का समय आता है तो न ब्रह्मा की चलती है और न विष्णु की॥

इस पर तीसरे ने कहा—तुम क्या बातें करते हो, भला मारने की क्या कहते हो, बड़ा वह है जो पालन करता है विष्णु ही सारे विश्व का पालन पोषण करता है। इस लिए वही बड़ा है॥

इस प्रकार सब ने अपनी २ तुक लगाई और मन भाई सो कही, परन्तु कोई भी कुछ निर्णय न कर सका, अन्त में यह ठहरा कि भृगु मुनि को भेजना चाहिए वह जावें और तीनों देवों की परीक्षा ले आवें।

भृगु जी गए और पहिले ब्रह्मा के पास पहुँचे और प्रणाम आदि किए बिना ही कहने लगे—

भृगु—अरे ब्रह्मा तू क्या कर रहा है, मैं तेरे सामने खड़ा हूँ

पर तू ने अभी मेरा स्वागत नहीं किया। ज्ञात होता है कि तू बड़ा अभिमानी है, अपने सामने किसी को कुछ गिनता ही नहीं, स्मरण रक्खो मैं अभी तेरी ऐंठ निकाल दूँगा, और एक ही श्राप में तेरा कल्याण हो जायगा।

ब्रह्मा यह सुन क्रोध में भर गया, और इस लड़के की धूर्त्तता को देख उसे मारने को चक्र लेकर दौड़ा—भृगु जी वहां से भाग आए और शीघ्रता से महादेव जी के पास पहुँचे। महादेव जी इस समय पार्वती से हँस २ कर वार्त्तालाप कर रहे थे भृगु जी ने पहुँचते ही कहा—

भृगु—अरे शिव! क्या तुझे दिखाई नहीं देता कि तेरे सम्मुख कौन खड़ा हुआ है। जान पड़ता है कि भांग के पीने से तेरी मति मारी गई है और तुझे नहीं सूझता कि मैं क्या कर रहा हूँ। लातों के मारे तू यह सब बातें भूल जायगा और देख संभल!

इतनी सुनते ही शिव जी के देह में आग लगी और विशेष कर पार्वती के सामने अपनी इतनी अविज्ञा देख उनसे न रहा गया और तुरन्त त्रिशूल लेकर भृगु को मारने के लिए दौड़े।

भृगु वहां से प्राण बचा कर विष्णु के पास पहुँचा उस समय वह गहरी नींद में सो रहा था। भृगु जी ने जाते ही एक लात मारी। विष्णु भड़भड़ाकर नींद से उठा और झट उसका पैर

पकड़ कर उसे दवाने लगा और साथ ही मीठी बोली से कहा— हे महामुने ! कृपया मेरा अपराध क्षमा कीजिए, क्योंकि मेरी देह की कड़ी २ हड्डियों से तुम्हारे कोमल सुकुमार पैर में चोट लग गई होगी । यह देखते ही भृगु जी उनके पैरों पर गिर पड़ा और प्रार्थना स्तुति करके वहां चला आया और आकर सब वृत्तांत देवताओं को कह सुनाया और सब लोग विष्णु को शीलता के कारण वड़ा मान उनकी जय गाने लगे ।

सच है मनुष्य हो या देवता उच्च वनाने वाली वस्तु केवल एक शीलता है। यह वह गुण है जिस के सामने समुद्र एक छोटी सी नाली वन जाते हैं। यह वह गुण है जिस के लिये पहाड़ भी एक निन्हा सा पत्थर हो जाता है । इस के सामने महावली सिंह एक हिरण का वच्चा, डरावना सांप पुष्पमाला और हलाहल विष अमृत की भांति हो जाता है। जिस मनुष्य के हृदय में शीलता निवास करती है संसार भर में कोई मनुष्य उस की वरावरी नहीं कर सकता।

इति शुभम

द्वितीय-प्रकरण

❀ अवसर-प्राप्ति ❀

किए विना कछु होत नहीं, सुनिये चतुर सुजान ।
उन्नति की यदि चाह है, तजो न अवसर जान ॥

विना टटोले संसार में कोई भी वस्तु अपने आप नहीं मिलती । (गारफील)

या तो मुझे मार्ग मिल गया या मैं स्वयम् बनालूंगा ।

आज तक कोई संसार में दिन नहीं व्यतीत हुआ जिस में भला कार्य्य करने के लिए कोई अवसर न आया हो ।

यदि आप गम्भीर हैं तो प्रत्येक मिनट को पकड़ लो, जो कुछ तुम कर वा विचार सकते हो आरम्भ भी कर सकते हो।

नाइल की लड़ाई के पूर्व जब नेलसन ने अपने सम्पूर्ण उपाओं[तजवीज़ों] को भली भांति समझा दिया तब कप्तान बरी (Berry) ने प्रसन्न हो कर पूछा—"महाराज ! अगर हम जीत गये तो संसार क्या कहेगा ? यह सुन कर नेलसन ने

उत्तर दिया—यहां पर अगर मगर की कोई बात नहीं, अवश्यमेव हम जीतेंगे। और ज्योंही कि उस के कप्तान सभा में से उठ कर अपने २ जहाज़ों की ओर चलने लगे त्यों ही उसने कहा—ऐ कप्तानो ! सुनो "कल इस समय से पहिले ही या तो मैं एक अति उच्च-पदवी पाऊँगा या मरघट की राह लूँगा" उसकी तेजमयी आंखों और अटूट साहस ने उस कीर्ति सम्पन्न विजय के सुअवसर को भांप लिया था जहां कि दूसरे लोगों को केवल पराजय ही पराजय दृष्टि गोचर होता था॥

नैपोलियन ने अपने एक इंजिनियर से जो कि सेंट बरनर्ड (St Bernerd) के भयानक दर्रे को देखने के लिए भेजा गया था, पूछा—"क्या उस मार्ग से पार निकल जाना संभव है, सेंट बरनर्ड ने हिचकिचा कर उत्तर दिया" शायद यह संभव है कि हम पार जा सकें। यह सुन और प्रत्यक्ष दुर्गम और दुस्सह कठिनाइयों को जानते हुए भी उस वीर ने निधड़क होकर आज्ञा दी "आगे बढ़ो, निस्संदेह हम पार जावेंगे। एल्प्स पहाड़ के पार करने का समाचार सुन कर इँगलेंड और आस्ट्रिया वाले यह कह कर हँसते और मज़ाक उड़ाते थे।

आज तक स्वप्न तक में भी इस पहाड़ के ऊपर पहिया नहीं घूमा है और न यह किसी प्रकार संभव हो सकता है कि आठ सहस्र मनुष्य इतना बड़ा भारी तोपखाना, करोड़ों

मन गोले और गोलियां और इतना अधिक लड़ाई का सामान इस के ऊपर से चला जावे। परन्तु रणवीर नेपोलियन इन बातों से कब रुक सकता था। अभी वह अपनी सेना को बर्फ से ढके चांदी समान उज्जल पहाड़ के पार करने की आज्ञा दे ही रहा था, कि इतने में ही कप्तान स्वैरो (Swarrow) और उसके कुछ सिपाहियों ने आकर कहा "हे सम्राट! बर्फ से ढके इतने ऊँचे एल्प्स पहाड़ के ऊपर होकर निकल जाना नितांत असम्भव है तब तो वीर नैपोलियन ने उठकर वीर रस भरे शब्दों से पुकार, कहा ॥

"There shall be no Alps.

"Impossible is a word to be found only in the dictionary of fools."

फिर क्या था तुरंत ही सैना चल पड़ी और सम्पूर्ण कठिनाइओं को सहन करती हुई बात की बात में पार पहुंच गई। और अभी जब की इटली वाले यह सोच ही रहे थे कि पहाड़ की ओर से शत्रु आना असम्भव है नैपोलियन बाज की तरह से उन पर आटूटा और क्षण भर में उनका रंग भंग कर दिया। यह देख कर सारा योरुप भौंचका सा रह गया ॥

जब यह असम्भव कार्य्य कर लिया गया, तब कुछ मनुष्य तो विचारने लगे कि यह तो पहिले भी हो सकता था

और कुछ इस महान और अपूर्व कार्य्य को दुर्गम कह कर बहाना बनाने लगे ॥

बहुत से सेना—नायकों के पास बहुत सी तोपें बन्दूकें बहादुर और दृढ़ सिपाही और अन्य लड़ाई के सामान थे परन्तु यदि कोई उनमें न्यूनता थी तो केवल नैपोलियन का सा दृढ़ संकल्प था। जिस ने [नैपोलियन] कभी कठिन से कठिन कठिनाइयों के सामने भी मुँह नहीं मोड़ा था बल्कि उस ने केवल अपनी सम्पूर्ण आवश्यकताओं से ही सम्पूर्ण अवसरों को बना या प्राप्त कर लिया था ॥

एक बार एक सेना-नायक [जनरल] घोड़े पर से गिर पड़ा और उस के बड़ी भारी चोट आई, अभी वह दर्द के मारे चिल्ला ही रहा था कि इतने ही में यकायक उसे शत्रु की सेना पर आक्रमण करने की आज्ञा दी गई। इधर शत्रु ने चारों ओर से भोजनादि का प्रबन्ध रोक दिया था, पहाड़ और पहाड़ियाँ सब शत्रुओं से घिरी पड़ीं थीं और सेना के भाग जाने व हारने में केवल एक या दो ही दिन की देर थी। ऐसी अवस्था और अवसर के होते हुए भी दर्द से पीड़ित जनरल ने तुरन्त ही अपने आप को रण-भूमि में ले जाने की आज्ञा दी और एक डोली में चार आदमियों के ऊपर चढ़ा हुआ और सैकड़ों मील बियाबान जंगलों में से होकर निकलता हुआ, युद्ध-क्षेत्र में आ पहुँचा। ज्यों ही कि उस ने रणभूमि में पैर

रक्खा त्योंही सैना की सम्पूर्ण अवस्था बदल गई। चारों ओर से "जनरल" आगया, "जनरल" आगया" ऐसा शब्द सुनाई देने लगा। फिर क्या था सारे सिपाहियों के हृदय में उत्साह और उमंग का समुद्र उमड़ उठा और बात की बात में जीते जिताए शत्रुओं को मार भगाया॥

प्यारे पाठको! क्या यह भाग्य का परिणाम है? या सैना नायक के दृढ़ संकल्प की महिमा है। यदि वह सैना-नायक अच्छे अवसर या अपने आरोग्य होने का ही विचार करता, और एक या दो दिन और ठहर जाता, तो अवश्यमेव सेना भाग गई होती, और पराजय के कलंक का टीका सदैव के लिए उसके माथे पर लग जाता। इसलिए पाठको! "कभी विशेष अवसर के लिए प्रतिक्षा [इंतज़ारी] न करो, साधारण अवसरों को ही पकड़लो और उन्हें बड़ा बनालो।"

इतिहास से हमें ऐसे सैकड़ों और करोड़ों मनुष्यों के उदाहरण मिलते हैं कि जिन्होंने छोटे २ अवसरों को पकड़ कर महान और ऐसे अद्भुत काम कर दिखाए हैं. कि जिन के लिए सारा संसार उनके सामने अपना सिर झुकाता है!

अकेले लँगोटधारी श्री स्वामी दयानंद सरस्वतीजी ने काशी में लाखों और सहस्रों पंडितों को शास्त्रार्थ के लिए आह्वान (चैलेंज) देते समय इस बात को नहीं विचारा था, कि अभी मैं अकेला हूँ. यहां पर मेरा कोई सहायक नहीं है और इस

समय मेरे लिए अवसर नहीं कि इन कट्टर पण्डितों के सामने आऊँ। परन्तु इन्हें तो भारत माता की सेवा करने की लगन लगी थी और वे इन कठिनाइयों से कब रुकने वाले थे। ऐसे दृढ़ संकल्प वाले महान पुरुषों के लिए तो प्रत्येक समय अच्छा अवसर है।

आधीरातका समय है। चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा छा रहा है। एकाएक चिल्लाने का शब्द सुन कर एक छोटी सी लडकी जाग पडी और दूरबीन को उठा कर समुद्र की ओर देखा तो क्या देखती है कि एक जलयान (जहाज) डूबा जाता है और उसके मल्लाह आदि प्राण बचाने के लिए "त्राहि, त्राहि" कह कर चिल्ला रहे हैं। यह देख कर लडकी ने अपने पिता को जगाया और कहा।

लडकी—पिताजी ! पिताजी ! देखो, यह जहाज डूबा जाता है भौंचक्का सा हुआ उठा, और झट से यंत्र लगा कर देख अपनी बेटी से बोला—

पिता—बेटी ! चुपचाप सो जा, तुझे क्या पड़ा है, देख कैसा भयानक तूफान आ रहा है। यदि इस में नाव भी डालेंगे तो कदाचित हमारी भी कुशल नहीं।

यह सुन लड़की ने फिर कहा।

लड़की—पिता जी ! चलो शीघ्र चलो, और इनके प्राण बचाओ, इस प्रकार इनको चिल्लाते देख मुझ से रहा नहीं

जांता। देखो यह देरी करने का अवसर नहीं, क्योंकि इनके डूब जाने से हमारे जाने से क्या लाभ, "कहा भयो जब चिड़ियां चुग गईं खेत" छोटी सी लड़की के इन वीर रस भरे शब्दों को सुन कर पिता का साहस भड़क उठा और तुरन्त ही वे दोनों नाव में बैठ कर जहाज की ओर चल दिए।

इधर तूफान और जहाज के डूबने से समुद्र के अथाह पानी में काल रूपी भँवर उठ रहे थे। परन्तु यह नाव चलाने व तैरने में बड़े चतुर थे, तुरन्त ही भँवरों को काटते हुए जहाज के पास जा पहुँचे फिर क्या था, बात की बात में रस्से डाल दिए। इधर इन डूबते हुए आदमियों के करुणा भरे शब्दों को सुनकर इस लड़की में अनन्त बल आ गया और इस प्रकार से पुत्री व पिता ने ९ आदमियों को खैंच कर उनकी जान बचाई। अब क्या था उन सब के मुँह से उस वीर लड़की के लिए "धन्य" है "धन्य" है शब्द निकलने लगे। आज इस बात को सहस्रों वर्ष व्यतीत हो गए, करोड़ों राजा और महाराजा यहां हो गए, परन्तु क्यों इस छोटी सी लड़की का नाम लिया जाता है? क्यों कि उसने उस छोटे से अवसर को नहीं त्यागा था, जिसे हमारे बहुत से नव-युवक सोने का समय, या बालकपन कह कर टाल देते हैं।

एक समय एक बर्तन मांजने वाले एक लड़के ने अपने प्रबन्धकर्त्ता से जो थोड़ी देर में होने वाली, एक बड़ी दावत

या पांति के सामान व स्थान सजा रहा था, प्रार्थना की। महाराज यदि आज्ञा हो तो "मैं इस विशेष अवसर के लिए कुछ सजावट की वस्तु तैयार करूँ"। यह सुन उस प्रवंधकर्त्ता ने पूछा, तू कौन है? यह सुन लड़के ने बड़ी नम्रता से सिर झुका कर कहा—"मैं भांड़े मांजने वाला" आपका एक नौकर हूँ। इतने में उस घर की स्वामिनी आ पहुँची और यह सुन लड़के से पूछने लगी "तुम क्या बना सकते हो" निडर होकर मुझ से कहो लड़के ने जवाब दिया, हे स्वामिने! मैं इस मेज के बीचो बीच में रखने के लिए कुछ बना सकता हूँ स्वामिनी ने तुरन्त ही बड़े अचम्भे के साथ उसे आज्ञा दे दी, और वह घी लेकर थोड़ी देर में ही एक अति उत्तम सिंह बना लाया, उसे देख स्वामिनी बड़ी प्रसन्न हुई और झट उस सिंह को मेज के बीचोंबीच रख दिया। थोड़ी देर में ही लोग इकट्ठे होने लगे। इस पांति में राजा, महाराजा, सौदागर व अन्य छोटे बड़े सम्मलित हुए, परन्तु ज्योंही उनकी दृष्टि इस सिंह पर पड़ी तो वह भोजनादि करना सब भूल गए और तुरन्त ही प्रवन्धकर्ता को बुलाकर पूछने लगे "यह कौन सा महान कारीगर है, कि जिसने अपनी ऐसी अद्भुत शक्ति व कला इस किंचित काल में नष्ट होने वाली वस्तु पर व्यय की है। प्रवन्धकर्ता से कुछ कहा न गया, सो उसने बड़े नौकर से कहा और वह तुरन्त ही इस छोटे से लड़के को सामने ले आया।

जब इन प्रसिद्ध पुरुषों ने यह जाना कि यह चीका सिंह एक भांडे मांजने वाले से थोड़ी सी देर में ही बनवाया गया है तो फिर क्या था, उसी का सब साधुवाद गाने लगे और वह दावत उस के मान में समाप्त हुई। इसी अवसर पर उसके स्वामी ने इस लड़के को एक अति निपुण कारीगर के पास पढ़ाने का प्रण किया और उसने वैसा ही किया।

इधर इस लड़के ने भी अभिमान रहित होकर बड़ी नम्रता से इस अवसर का पूरा लाभ उठाया और थोड़े ही दिनों के पीछे वह अपने समय का सब से बड़ा कारीगर हो गया।

किसी ने सच कहा है—"निर्बल मनुष्य अवसरों के लिए प्रतीक्षा किया करते हैं, परन्तु बलवान पुरुष उन्हें स्वयम् बना लिया करते हैं।

किसी महात्मा का वचन है कि संसार में सब से उत्तम पुरुष वह हैं; जिन्होंने अवसरों के लिए प्रतीक्षा नहीं की वरन जब कभी वे आये तभी उन्हें पकड़ कर अपना दास बना लिया है।

एकाएक धन व सहायता पाने के लिए लाखों में चाहे तुम्हें एक भी अवसर न मिले, परन्तु ऐसे करोड़ों अवसर आते हैं जिन्हें तुम अपनी उन्नति का साधन बना सकते हो।

"क्या करें मुझे कोई अवसर नहीं मिलता, मेरे लिए ऐसा कोई अवसर नहीं आया"........इत्यादि यह केवल निर्बल

और आलसी मनुष्यों के ही बहाने हैं । प्रत्येक मनुष्य का जीवन, चाहे वह निर्धन हो या धनवान हो, अवसरों से परिपूर्ण है। प्रत्येक पाठ जिसे हम विद्यालय व महाविद्यालय [स्कूल व कालेज में] पढ़ते हैं एक अवसर है । प्रत्येक परीक्षा हमारे जीवन में एक अवसर है । प्रत्येक मुवक्किल [आश्रित] एक अवसर है । प्रत्येक धार्मिक उपदेश एक अवसर है । प्रत्येक व्यापार एक अवसर है । हमारा प्रत्येक व्यवहार, नम्र शांत और सच्चरित होने के लिए एक सच्चा अवसर है। यदि किसी को हमारे बल पर भरोसा है या हम पर उसका विश्वास है तो यह भी हमारे लिए एक अमूल्य अवसर है। जब कि मातंग जैसा भंगी का पुत्र, और वालमीक जैसा वधिक एक बड़े से बड़ा महात्मा और महर्षि बन सकता है तो फिर नीच से नीच और निर्धन से बच्चे को और बढ़ने के लिए क्या चाहिए जो कि अवसरों में मातंग से कहीं अधिक ऊँचा और धनवान है।

वह केवल आलसी मनुष्य ही हैं, जो प्रायः इस बात की शिकायत किया करते हैं कि हमें कोई अवसर नहीं मिला व हमारे पास कोई समय नहीं है, सच तो यह है हम से कुछ नव-युवक, टूटे फूटे अवसरों से ही जिन्हें बहुत से नवयुवक बेपरवाही से नष्ट करते हैं, इतना लाभ प्राप्त कर सकते हैं जितना कि दूसरे (आलसी और बातूनी) मनुष्य सारे जीवन

भर में भी नहीं उठा सकते। वे शहद की मक्खियों की तरह प्रत्येक फूल से रस निकाल लेते हैं। प्रत्येक मनुष्य जिस से यह मिलते हैं, प्रत्येक दिवस जो इनके सामने व्यतीत होता है, कुछ न कुछ इनके विद्या व धन रूपी भँडार में सम्मलित कर ही देता है॥

संसार में ऐसा कोई मनुष्य नहीं है, जिस का जीवन भर में एक बार भाग्योदय न हो। परन्तु जब भाग्य (तकदीर) मनुष्य को अपना स्वागत करने के लिए उद्यत नहीं पाता तो इधर द्वार में से घुस कर उधर खिड़की में होकर निकल जाता है॥

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने सड़कों पर चलते हुए मार्ग में गाड़े मीलों के पत्थरों से अँग्रेजी की गिनती लिखना पढ़ना सीख लिया था! जब कि हमारे बहुत से नव-युवक सहस्रों बार सड़कों पर निकलने और मीलों के पत्थरों को देखने पर एक अक्षर भी स्मरण नहीं कर सकते।

सच तो यह है जो मनुष्य आंखें खोल कर जीवन-रूपी मार्ग में होकर चलते हैं वे प्रत्येक स्थान पर अवसरों को देख लेंगे। कान खोल कर चलने वाले यात्री, सहायतार्थ चिल्लाने वाले भूखे भिखारियों के करुणा भरे शब्दों को पग २ पर सुन लेंगे। पवित्र हृदय वाले नव-युवक स्थान २ पर शुद्धता और शिक्षा के पाठ ग्रहण कर सकते हैं और इसी प्रकार खुले हाथों

चलने वाले मनुष्य के लिए कभी अच्छे कामों के लिए कोई न्यूनता नहीं है ॥

हम में से प्रत्येक पुरुष ने ठोस पदार्थ को पानी में गिरने के समय ऊपर को उछलते हुए देखा है, परन्तु क्या किसी ने आर्कमिडीज से पहिले इस बात को समझा कि यह पदार्थ अपने परिमाण के बराबर ही पानी व अन्य किसी द्रव्य को ऊपर उछालता है और इसी बात को जान कर अब उस से हम लोग, ऊँची नीची व भौंडी से भौंडी वस्तु का घन फल निकाल सकते हैं।

प्रत्येक मनुष्य ने सहस्रों बार सेबों को वृक्षों से गिरते हुए देखा है, परन्तु क्या कभी किसी के हृदय में यह विचार उत्पन्न हुआ कि यह क्यों नीचे की ओर गिरते हैं और क्यों नहीं आकाश की ओर उड़ जाते हैं। परन्तु यही दृश्य जब न्यूटन की दृष्टि के सामने आता है तो उसके ऊपर एक विलक्षण प्रभाव डालता है। न्यूटन ने तुरंत ही इस अवसर को पकड़ कर बतला दिया कि यह "आकर्षण-शक्ति" है जिसके कारण प्रत्येक फल पृथ्वी की ओर आता है और इसी नियम से सारे नक्षत्र आदि घूमते हैं। यह वही न्यूटन है जो पश्चिमी जगत में सब से बड़ा गणित हो गया है ॥

सैकड़ों पुजारियों और दूसरे मूर्ति-पूजकों ने अनेक बार चूहों आदि को मूर्ति के ऊपर चढ़ते देखा होगा, परन्तु क्या

कभी किसी के हृदय में यह विचार उत्पन्न हुआ कि यह महादेव जी, जो चूहे से अपनी रक्षा नहीं कर सकते, किस प्रकार सारे संसार की रक्षा करेंगे । परन्तु यही दृश्य जब मूलशंकर के सामने आता है तो उनके जीवन पर एक अद्भुत प्रभाव डालता है और इसी छोटे से अवसर के कारण भारत का उद्धारकर्ता जगत विख्यात महर्षि श्री स्वामी दयानंद सरस्वती बन जाता है, जिन्होंने आर्य्य समाज की नींव डाली और वैदिक धर्म को पुनर्जीवित किया॥

प्यारे पाठको ! ऐसे ही मनुष्य संसार में महान पुरुष समझे जाते हैं, क्योंकि इन्होंने छोटे २ अवसरों को काम में लाकर सारे संसार के लिए बड़े २ उपकार किए हैं । इतिहास को पढ़ो और महान पुरुषों के जीवन को अपना आदर्श बना कर अपने सामने रक्खो । जब तुम किसी पुरुष को अपने कार्य्य की ध्वनि में निमग्न देखो तो स्मरण रक्खो कि उसकी पहुँच बड़े से बड़े सम्राट तक हो सकती है ।

जो मनुष्य छोटे २ अवसरों को कार्य्य में लाते हैं, वे उन बीजों को बोते हैं जो कि भविष्य में उनके और दूसरे दोनों लिए अवसर-रूपी अनेक फलों को प्रदान करेंगे । जिस मनुष्य ने अपने पहिले समय में सत्यता पूर्वक कार्य किया है सचमुच उसने आगामी मनुष्यों के लिए विद्या और सुख को संचय करके रक्खा है ।

एक बार एक दर्शक ने जब कि वह बहुत से देवताओं की मूर्तियों को देख रहा था, बनाने वाले कारीगर से पूछा कि इस देवता का जिस का मुँह बालों से ढका है और पैर पर पंख लगे हुए हैं, क्या नाम है ?

कारीगर—इस का नाम अवसर है।

दर्शक—इस का मुँह क्यों ढका हुआ है ?

कारीगर—क्योंकि मनुष्य नहीं जानते कि यह किस समय आता है।

दर्शक—इसके पैरों पर पंख क्यों लगे हुए हैं ?

कारीगर—क्यों कि जब यह आता है तब ठहरता नहीं और तुरंत ही चला जाता है और जब यह एक बार चला गया तो फिर लौट कर नहीं आता है।

किसी ने क्या ठीक कहा है कि अवसर के सामने बाल हैं, परंतु पीछे से वह गंजा है। यदि तुमने बालों से इस को पकड़ लिया तो ठीक, नहीं तो जब यह एक बार निकल गया तो फिर वायु भी इसे नहीं पकड़ सकती।

प्रायः बहुत से मनुष्य कहा करते हैं, मुझे जरा सी देर हो गई, यदि जरा ही आगे पहुंचता तो काम बन जाता" ऐसे कहने वाले लोग संसार में कोई भी काम ठीक समय पर नहीं कर सकते॥

एक रेलगाड़ी का ब्रेकमैन (जो गाड़ियों को ठहराता व झंडी आदि को दिखलाता है) लोगों में बड़ा प्रसिद्ध था सारी

गाड़ी के यात्री उसे बहुत चाहते थे। क्योंकि वह हर एक को जो कोई उसे पूछता, भली भांति बता देता था। परंतु उसमें एक बड़ा भारी ऐब यह था कि वह कभी भी अपनी जिम्मेदारी को अनुभव नहीं करता था।

जब कभी उसे कोई कुछ कहता तो झट इस प्रकार हँस कर जवाब देता कि मानो यह अपने कर्तव्य को भली भांति समझता है और धीरे से कह देता था "मैं आपका बड़ा कृतज्ञ हूँ; परंतु मेरा सब काम ठीक हो रहा है, आप किंचित् मात्र भी परवाह न करें॥

एक दिन बड़ी भारी आंधी चल रही थी, जिसके कारण रेल को भी कुछ देरी हो गई। इस समय आंधी के कारण यह ब्रेकमैन भी गाड़ी के साथ था। इसे तो सदैव के अनुसार कुछ चिंता नहीं थी और शराब की बोतल चढ़ा कर परिहास (मखोल) आदि में चूर था। परंतु गाड़ी-ड्राइवर और इंजीनियर बड़े सावधान और चिंतित हो रहे थे, एकाएक इंजन के बिगड जाने से गाडी दो स्टेशनों के बीच में रुग गई और पांच ही मिनट में दूसरी गाडी आने वाली थी। ड्राइवर झट से पीछे गया और इस ब्रेकमैन से बोला "जाओ नीचे उतर कर लाल झंडी दिखलाओ, क्योंकि एक्सप्रैस (Express) अभी आ रही है।

"कोई जल्दी नहीं है, ठहरो अभी मैं अपना ओवरकोट पहिन लूं" उसने उत्तर दिया।

इस पर ड्राइवर ने बड़ी गंभीरता से कहा "क्षण भर की भी देरी न करो, नहीं तो गाड़ियां लड़ जायगीं देखो एक्सप्रैस (Express) आ रही है ॥

"बहुत अच्छा" ! उसने हंस कर जवाब दिया, यह सुन कर ड्राइवर तो तुरंत ही इंजन की ओर बढ़ गया।

इधर इसने पहिले अपना ओवरकोट पहिना और फिर दो एक शराब के घूँट भरे, ताकि बाहिर की सर्दी न सताए और फिर धीरे से लालटेन उठा, सीटी बजाता हुआ गाड़ी से नीचे उतरा।

अभी दश कदम भी न गया था, कि इतने में ही हफ २ करती हुई गाड़ी आ पहुँची। परन्तु अब क्या हो सकता था, दोनों गाड़ियां लड़ गईं और थोड़ी सी देर के पीछे सहस्रों मनुष्यों की जान गई।

अब क्या था इस ब्रेकमैन की तलाश की गई, पर वह कहीं न पाया। परंतु जब दूसरे दिन फिर ढूँढा गया, तो एक पागल की नाईं खाली लालटेन को एक खाली रेलगाड़ी के सामने हिलाते हुए एक खलियान के पास खड़ा पाया। फिर क्या देरी थी, झट घर को लाया गया और फिर पीछे से पागल खाने में भेज दिया गया। अब तो जब कभी कोई आदमी इसके सामने आता, तो वह शोक भरी वाणी से चिल्ला कर कहा करता था "हाय मैं ओवरकोट न पहिनता हाय ओवर-कोट न पहिनता"..........

इस प्रकार सहस्रों मनुष्य अवसर निकलने और काम बिगड़ जाने के पीछे "ओवरकोट न पहिनता" २ आदि चिल्लाते हैं। "परन्तु फिर कहा होत जब चिड़ियां चुग गईं खेत" ॥

प्यारे नवयुवको! क्यों सारे दिन आलस में पड़े रहते हो क्या तुम्हारे जन्म लेने से पहिले ही सारा देश भरा पड़ा था? क्या तुम्हारे लिए सारी भारत भूमि मरुस्थल हो गई है? क्या तुम्हारे लिए यहां पर कोई जगह खाली नहीं है? क्या तुम्हारे लिए यहांपर अब कोई काम नहीं रहा है? क्या स्वर्णमयी भारत भूमि अब तुम्हारे लिये कुछ उत्पन्न नहीं कर सकती है, जो दस २ या पंद्रह २ रुपयों की नौकरियों के पीछे पुतलियों की तरह नाचते फिरते हो! प्यारे पाठको, साहस करो! विशेष अवसरों के लिए प्रतीक्षा न करो, बल्कि स्वयं उन्हें अपना बनालो, जैसे श्री स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने शिवरात्रि के साधारण दृश्य को अपना बना लिया था। बनालो, जैसे ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने सड़क पर चलते हुए समय को अँग्रेजी की गिनती सीखने का अवसर बना लिया था। बनालो जैसे नैपोलियन ने सैकडों बार असम्भव को सम्भव बना लिया था बनालो जैसे अन्य सहस्रों वीरों ने पराजय के अवसरों को विजय का अवसर बना लिया है ॥

सुनहरी अवसर भी आलसियों के लिए कुछ भी नहीं हैं.

परंतु परिश्रमी लोग साधारण अवसरों को भी सुनहरी अवसर बना लेते हैं। क्योंकि—

पुरुष सिंह जो उद्यमी, लक्ष्मी ताकी चेरि।
भाग्य भरोसे जो रहे, कायर वाको टेरि ॥

तीसरा प्रकरण

:: अभ्यास और परिश्रम ::

करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात तें, शिल पर होत निशान ॥

प्रत्येक उत्तम कार्य्य प्रथम असम्भव ही प्रतीत होता है।

(कार लाईल)

विजय उसी को प्राप्त होती है जो सब से अधिक परिश्रम करता है।

(नैपोलियन)

लगातार एक काम को करते रहना और परिश्रम पर ही भरोसा रखना सम्पूर्ण कठिनाइयों को दूर कर देते हैं। इन के सामने असम्भव बातें भी सम्भव हो जाती हैं।

विजय के तीन बड़े २ अंग हैं, १—गम्भीर विचार, २—गूढ़ दृष्टि, ३—कार्य परायणता। (बर्क)

उज्जेन नगर के राजा की लड़की विद्वत्तमा ने चारों ओर यह घोषणा करा दी है, कि जो कोई पंडित शास्त्रार्थ में मुझे हरा देगा उसी के साथ में अपना विवाह करूँगी

सैकड़ों पंडित प्रति दिन आते थे, परंतु उस से हार कर अपना सा मुँह बनाए हुए लौट कर फिर चले जाते थे। अंत में जब कोई भी पंडित उस से न जीता, तब तो खिसिया कर उन सब ने मिलकर सम्मति की, कि इस राजकुमारी का ऐसे मूर्ख के साथ विवाह करना चाहिए, कि जिसका इसे जन्म भर स्मरण रहे। यह कह कर वे मूर्ख की खोज में निकले। इधर उधर घूम कर आगे बढ़े तो क्या देखते हैं कि एक मनुष्य पेड़ की जिस डाल पर बैठा है उसी को काट रहा है। तब तो इसे महामूर्ख समझ, बातों में देकर नीचे उतारा और उस से बड़े प्यार में पूछा कि क्या तुम अपना विवाह करना चाहते हो, यह सुन कर वह मूर्ख तो बड़ा ही प्रसन्न हुआ, इस पर पंडितों ने कहा देख हम तेरा विवाह आज राजकुमारी से करा देंगे, पर तू एक बात याद रखना कि कुछ बोलना नहीं, यदि राजकुमारी कुछ पूछे तो भी चुप रहना इतना सिखा कर वे सब राजकुमारी के पास पहुँचे और इस मूर्ख की ओर निर्दिष्ट करके कहा—"यह हमारे गुरु साक्षात् बृहस्पति के समान हैं आप इन से शास्त्रार्थ कीजिए। परंतु इस समय ये मौन-व्रत धारण किए हुए हैं, जो कुछ आप को बातचीत करनी हो वह संकेतों से ही करना विद्युत्तमा ने यह विचार कर कि ईश्वर एक है अपनी एक अँगुली उठाई। परंतु इस मूर्ख ने यह समझा कि राजकुमारी एक अँगुली

दिखा कर मेरी एक आंख फोड़ डालना चाहती है। और इस के उत्तर में मन में यह कह कर कि मैं इसकी दोनों आंखें फोड डालूँगा, दो अँगुली उठाई। इस पर पंडितों ने ऐसी विलक्षण युक्तियां दीं कि विचारी राजकुमारी को हार मान लेनी पड़ी फिर क्या था दोनों का विवाह हो गया॥

एक समय रात को जब दोनों राज भवन में सो रहे थे एकाएक एक अवाज सुनाई दी राजकुमारी ने कहा कि यह क्या है। इस पर उस मूर्ख ने जो शब्दों का ठीक २ उच्चारण भी नहीं कर सकता था कहा कि उट्र चिल्ला रहा है राजकुमारी ने फिर पूछा तो भी उट्र २ ही चिल्लाता रहा और उष्ट्र न कह सका। अब तो राजकुमारी को पंडितों का छल प्रगट हो गया और बड़ा पश्चाताप करने लगी और अंत में क्रोध के मारे इस मूर्ख को घर से निकाल दिया। अब तो इस को बड़ा भारी दुःख प्राप्त हुआ और वह लज्जा के मारे जंगल में घूमने लगा आगे बढ़ा तो क्या देखता है कि कुआ के मनखंडे पर एक पटिया पड़ी हुई है और उस पर कुछ निशान बने हुए हैं यह देख कर उसने सोचा देखो रस्सी के बार २ आने जाने से पत्थर पर भी कैसे निशान हो जाते है तो क्या मेरा हृदय ऐसा कठोर है कि बार २ पढ़ने व स्मरण करने पर भी मुझे पढ़ना नहीं आएगा। अवश्यमेव मैं भी पढ़ सकता हूँ और वह यह कह कर चल दिया और पढ़ने में

लग गया। इस ने जी तोड़ कर ऐसा अभ्यास और परिश्रम किया कि थोड़े समय में जगत प्रसिद्ध महाकवि कालिदास बन गया, जिसका नाम केवल भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि सारे संसार में जब तक कि गंगा यमुना में पानी और सूर्य्य में ज्योतिः है अमर रहेगा॥

अहा—अभ्यास की क्या अपूर्व महिमा है।

जिस समय शेरोडियन (Sherodian) प्रथम बार राज सभा (Parliament) में अपना व्याख्यान दे चुका तो संवाद दाता वुडफाल (Woodfall) ने कहा—"मुझे बड़े शोक से कहना पड़ता है कि मेरी सम्मति में यह तुम्हारे अनुकूल काम नहीं है तुम्हारे लिए यही अच्छा होगा कि तुम अपना पहिला काम सँभालो। यह सुन शेरोडियन थोड़ी देर तक माथे पर हाथ रख कर सोचता रहा और फिर उसने अपना सिर उठा कर कहा—"यह काम मेरे अनुकूल है" मुझे अवश्यमेव ही यह आजायगा। इसका मुझ से और केवल मुझ से ही प्रादुर्भाव होगा। अविराम परिश्रम और अभ्यास के करने से थोड़े दिनों में ही यह वह मनुष्य बन गया कि जिसने वारन हेस्टिंगके विरुद्ध अपनी उत्साह पूर्ण ध्वनि को उठाया था। और जिसे धुरंधर व्याख्यान-दाता महाशय फोक्स (Fox) ने हाउस आफ कौमंस (House of common) में आज तक जितने व्याख्यान हुए हैं उन में सब से उत्तम व्याख्यान बतलाया॥

बरनार्ड पालीसी ने जिसने कि अठारह वर्ष की आयु में ही अपने घर को त्याग दिया था, कहा—मेरे लिए आकाश और पृथ्वी के अतिरिक्त अन्य कोई पुस्तक नहीं है, यद्यपि वह एक कांच-रंजक (Glass painter) था परंतु उस के अंतर्गत चित्रकारी की रुचि थी। इटली के बने हुए एक सुंदर प्याले को देख कर इसके अंदर एक प्रकार का आंदोलन सा मच गया और इसने उसी क्षण उस वस्तु की खोज करने की (जिसका कि इसके ऊपर रोगन चढ़ा था) एक ध्वनि सी सवार हो गई। और महीनों और वर्षों तक इसने उन मसालों को जानने के लिये जिन से यह रोगन बना था नाना प्रकार के अनुभव और प्रयोग किये। इस ने एक भट्टी बनाई पर सफलता प्राप्त नहीं हुई। दूसरी बार बहुत सा ईंधन जलाने भट्टीके बर्तन और अनेका प्रयोग करने और बहुत सा समय नष्ट करने से इसे निर्धनता ने आ दबाया और फिर ईंधन की कमी के कारण साधारण भट्टी में इस परीक्षा को करने में असमर्थ रहा और असफलता के अतिरिक्त कुछ हाथ न आया। परन्तु इस ने अपने अभ्यास को न छोड़ा और फिर उसी स्थान पर कार्य आरम्भ कर दिया और अब की बार तीन सो टुकडों में से एक टुकड़ा अति उत्तम रंग से ढका हुआ निकल आया॥

इस आविष्कार को पूर्ण करने के लिए इसने अपनी पीठ पर ईंटें ढोईं और फिर एक कांच की भट्टी बनाई। यह उसकी

दृढ़ता की परीक्षा लेने का समय था। इसने छः दिन तक बराबर आग जलाई पर तो भी यह रंग मसाला [रोगन] न पिघला और वह भी कोरा फाकानंद हो गया। परंतु उसने कुछ धन उधार ले लिया और थोड़े से मिट्टी के बर्तन और कुछ ईंधन मोल ले आया। और फिर अच्छा परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करने लगा। अब उसने दूसरी बार आग जलाई। और सारा ईंधन फुक गया परंतु कुछ परिणाम न निकला। इस पर उस ने अपने बाग की मेडों [बाढ़] पर लगी हुई लकड़ियों को उखाड़ कर भट्टी में लगा दिया। और अब की बार धहधकाती हुई आग से (Emenel) वह रोगन पिगल गया। अब क्या था उसने इस के रहस्य को पहिचान लिया। और अन्तिम अविराम निरंतर अभ्यास ने विजय प्राप्त कर ही ली॥

एक ग्रन्थ प्रकाशक ने अपने मुनीम को लिखा कि यदि तुम दो सप्ताह तक एक भी पुस्तक बेचे बिना लगातार कठिन परिश्रम करते रहोगे तो तुम अवश्य सफलता को प्राप्त कर लोगे।

कारलाईल कहा करता था पहिले अपने काम को भली भांति जान लो और फिर उसके करने में लग जाओ। उस में कभी ढील न डालो बल्कि शहद की मक्खी या हरिकुश की तरह जुट जाओ।

रिनोल्ड का कथन है कि जिस किसी ने चित्र पर रंग करने वा किसी दूसरी कला में सब से बढ़ जाने का दृढ़ संकल्प कर लिया है तो उसे चाहिए कि अपने मस्तिक की सम्पूर्ण शक्तियों को प्रातःकाल उठने के समय से लेकर रात को सोने के समय तक उसी काम में लगता रहे।

प्रसिद्ध चित्रकार टरनर (Turner) कहता है कि मेरे पास सफलता प्राप्त करने के लिए कोई गुप्त भेद है तो वह केवल घोर और कठिन परिश्रम है॥

एक विद्वान का कथन है कि वह मनुष्य जो सदैव यही कहा करता है, कि उसको पहिले करूँ या इस काम को, वह कुछ भी नहीं कर सकता। वह मनुष्य जो किसी बात का संकल्प करता है परंतु तुरंत ही उसे एक मित्र के कथन-मात्र से बदल लेता है या हर एक से सम्मति मांगता फिरता है, वह कभी किसी लाभदायक वा बड़े कार्य को नहीं कर सकता, वह किसी काम में उन्नति प्राप्त नहीं कर सकता, और न एक ही अवस्था में स्थिर रह सकता है बल्कि सदैव अवनति करता रहेगा।

परिश्रम ही ने सेतबन्ध रामेश्वर का पुल बांध कर समुद्र के अभिमान का दलन किया। परिश्रम ने ही मिश्र के ऊजड़

और बियाबान जंगलों में बड़े २ विशाल स्तम्भ (Pyramids) खड़े कर दिये । परिश्रम ने ही चीन में अति विशाल और अद्भुत दीवारें बना दीं। परिश्रम ने छोटी २ लोहे कीलों पत्तियों सांकरों और छड़ों को रेल का चलता हुआ इंजन, जो सैकड़ों करोड़ों मनुष्यों और गाड़ियों को खींचता फिरता था बनने का सौभाग्य प्राप्त कर दिया है । परिश्रम ने ही विद्युत कला का आविष्कार कर हमें क्या सुख प्रदान नहीं किये। इसी परिश्रम ने एक समय पुष्पक विमान से नभयान बना कर सैकड़ों भारत वासियों को आकाश-मार्ग से लंका से अयोध्या लाकर रक्खा था और आज इसी परिश्रम के त्याग देने से वह भारत वासी भूखे मर रहे हैं । हे परिश्रम देव ! तेरी महिमा अपरंपार है, जहां तू नहीं वहीं दुःख और दरिद्रता का संचार है ।

एक संवाद-दाता ने एडिसन (Edison) से पूछा क्या आपने इतने आविष्कार किसी स्वाभाविक उत्तेजना द्वारा किए हैं, या वे रात को सोते समय आप के मस्तक में आया करते हैं।

एडिसन ने उत्तर दिया कि आज तक कोई भी करने योग्य कार्य्य मैंने दैवयोग से नहीं किया है । और फोनोग्राफ (Phonograph) को छोड़ कर कोई भी आविष्कार मुझे एकाएक प्राप्त नहीं हुआ है। नहीं । जब मैंने भली भांति यह

निर्णय कर लिया कि यह कार्य्य करने योग्य है, इस परिणाम तक अवश्य ही पहुँचना चाहिए, तो जब तक कि उस के उपलब्ध करने में मैं फली भूत नहीं हुआ हूँ तब तक मैंने उस में सिर तोड़ परिश्रम और अभ्यास किया है मैं सदैव व्यौपार सम्बन्धी आविष्कारों में लगा रहा हूँ। मैंने कभी विद्युत कला की अद्भुत मायाओं के देखने में अपना समय नष्ट नहीं किया। मैं इस बात को ही पसंद करता हूँ। पर यह नहीं जानता कि क्यों और किस कारण से। जो कोई कार्य मैंने आरम्भ किया है वह सदैव मेरे ध्यान में रहा करता है और जब तक मैं उसे समाप्त नहीं कर लेता तब तक उस से प्रथक होने में मुझे चैन और कल नहीं पड़ती।

वह मनुष्य जो इस प्रकार पूर्णतया से किसी काम में अपने आप को लगा देता है वह अवश्यमेव कुछ न कुछ कर लेता है। और यदि साथ ही साथ उसमें योग्यता और बुद्धिमता भी है तो उसकी सफलता और भी अधिक उच्चतर होती है। जार्ज स्टेफनसन (George stephenson) ने रेल के इंजन को चलाने में निरंतर पंद्रह वर्ष परिश्रम किया था महाशय वाट (watt) आप के इंजन को ठीक करने में पचीस वर्ष तक लगे रहे थे। हारवे को रक्त के घूमने के सिद्धांत को छपवाने के पहिले आठ वर्ष कठिन परिश्रम करना पड़ा था। उस समय उसके सहयोगी डाक्टर उसे खफ्ती कहा करते थे, परन्तु वह पचीस वर्ष तक लगातार अभ्यास

और प्रतीक्षा करता रहा है और अंत में वह लोग उस का सिद्धांत मान गये ॥

न्यूटन ने इक्कीस वर्ष का होने के पहिले ही आकर्षण शक्ति के नियम को ज्ञात कर लिया था । परन्तु पृथ्वी की परिध के नाप में थोड़ी सी त्रुटि ही इस के सिद्धांत में भंग डालती थी बीस वर्ष अभ्यास करने के पश्चात् इसने इस त्रुटि को ठीक कर दिया और बतला दिया कि नक्षत्र आदि भी अपने २ मण्डलों में उसी नियम के अनुसार घूमते हैं जिस नियम के कारण सब ऊपर से पृथ्वी पर गिरता है ॥

रस्किन कहा करता था कि कभी अपनी विलक्षण बुद्धि पर निर्भर मत रहो । यदि तुम्हारे अन्दर विलक्षण बुद्धि है तो परिश्रम इस को और भी उन्नत कर देगा यदि नहीं है तो अभ्यास इस को पूरा करेगा ।

प्रतिकूल अवस्थायें तुम में शक्ति उत्पन्न कर देंगी । प्रतिकूलता ही सामने करने के लिए तुम्हें अधिक शक्ति प्रदान करेगी । रुकावटों का जीत लेना अन्य रुकावटों को दबा देने के लिए अधिक बल और योग्यता उत्पन्न कर देता है ॥

फरवरी सन् १४९२ ई० में एक निर्धन लड़का निराशता के मारे अपने खिच्चर की पीठ तक सिर झुकाए हुए अलहम्ब्र (Alhambra) के सुन्दर फाटक में से धीरे २ निकल रहा

था। बालकपन से उसके ऊपर यह ध्वनि सवार रही थी कि पृथ्वी गोल है। उसका विचार था कि ४०० मील के अन्तर पर जो खुदी लकड़ी और दो मनुष्यों के शरीर जो परिचित आदमियों के शरीर से मिलते जुलते नहीं थे मिले हैं वह किसी अज्ञात पश्चिमी देश से वह कर आगए हैं। परन्तु उस की इस अन्वेषण के हेतु सामुद्रिक यात्रा के लिए सहायता की अंतिम प्रार्थना पर पानी फिर गया। पुर्तगाल के सम्राट जोहन ने उसके भेजने का विचार करने के वहाने से गुप्तरूप से स्वयं अपना एक बेड़ा भेज दिया था॥

इधर उस के ऊपर टूक मांगने की नौबत आ पहुँची और वह पेट पालने के लिए मानचित्र (नक्शे) बनाता फिरा उस की स्त्री भी जाती रही, मित्रों ने भी उसे पागल बतलाया और उसे त्याग दिया। इसबेला (Isabella) और फरडीनेन्ड (Ferdinand) के सभा के पंच लोग पश्चिम की ओर खैंच कर पूर्व में पहुँचने के सिद्धांत पर खूब हँसते और मज़ाक उड़ाते थे। उस समय की थोड़ी सी वार्तालाप हम यहां पर लिखे देते हैं।

कोलम्बस—परन्तु सूर्य और चन्द्रमा गोल हैं फिर पृथ्वी गोल क्यों नहीं है?

एक बुद्धिमान् पंच—यदि पृथ्वी गोल है, तो किस पर थमी हुई है?

कोलम्बस—सूर्य और चन्द्रमा को कौन थामे हुए हैं ?

एक विद्वान डाक्टर—परन्तु फिर किस प्रकार मनुष्य छत पर लटकती हुई मक्खी की तरह सिर नीचे किए हुए और पैर ऊपर को किए हुए चलते फिरते हैं। किस प्रकार वृक्ष अपने जड़ों को हवा में रखते हुए उग सकते हैं।

दूसरा तत्वज्ञानी—तब तो तालाबों और पोखरों का पानी बह उठेगा और हम सब बह जायँगे।

एक पुजारी—यह सिद्धांत बाइबल के विरुद्ध है। बाइबल कहती है कि पृथ्वी और आकाश तम्बू की तरह फैले हुए हैं। निसन्देह यह चपटे हैं यह कहना कि गोल है सरासर उसका अपमान करना है।

कोलम्बस-इस प्रकार निराश हो अलहम्बरा को छोड़ अपनी सभायें चार्ल्स सप्तम के पदारोपण करने की आशा करता हुआ वहां से चल दिया; परन्तु अभी दो चार पग ही चलने पाया था कि उसे अपने नाम को पुकारती हुई एक आवाज़ सुनाई दी। क्योंकि एक वृद्ध पुरुष ने कहा था यदि कुछ यह नवयुवक कहता है वह ठीक निकला तो थोड़े ही व्यय से राज्य बड़ा प्रसिद्ध हो जायगा। इस पर इसाबैला ने कहा यह काम अवश्यमेव होना चाहिये। इस के लिये मैं अपने आभूषण तक गहने रख दूंगी। अच्छा इसे बुलाओ।

कोलम्बस लौट आया और साथ ही इस ने संसार को लौट पलोट कर दिया। कोई मुल्लाह स्वेच्छानुसार जाना नहीं चाहता था परन्तु राजा और रानी ने उन्हें धमकी देकर जाने के लिये उद्यत कर दिया, ३ दिन लगातार वे एक जहाज को खेते रहे परन्तु आगे बढ़ कर मल्लाह लोग बड़े घबड़ाये पर कोलम्बस ने उन्हें भारत वर्ष के सुनहरी चित्र और अमूल्य रत्न दिखला कर धैर्य दिलाया।

कैनेरीज़ से २०० मील पश्चिम की ओर कुतुबनुमा की सुई ने ध्रुव तारे की ओर निर्दिष्ट करना छोड़ दिया, तब तो सब मल्लाह गदर मचाने पर आरूढ़ हो गए। परन्तु कोलम्बस ने उन से कहा ध्रुव तारा ठीक उत्तर की ओर नहीं है। घर से २३००० तेईस सहस्र मील की दूरी पर बेरों से लदी हुई एक झाड़ी बह रही थी, स्थली पत्ती भी उड़ते दिखाई पड़े और उन्हें अद्भुत प्रकार से खुदे हुए लकड़ी के लठ्ठे बहते हुए मिले जिन्हें उन्होंने उठा लिया। इस कठिन परिश्रम और दृढ़ता का परिणाम यह निकला है कि १२ अक्टूबर का कोलम्बस ने पश्चिमी जगत में कैस्टाइल का भण्डा गाड़ दिया।

साइपरस डबल्यू फील्ड ने जब उसके मन में यह बात समा गई कि रस्सी (सांकर) को अटलांटिक महासागर की तह में डालने से योरुप और अमरीका के बीच में तार

लगाया जा सकता है, अपने बड़े लाभकारी काम को छोड़ दिया। वह अपनी सम्पूर्ण शक्तियों सहित इस कार्य के करने में निमग्न हो गया। काम के आरम्भ में उसे एक सहस्र मील न्यूयार्क (अमरीका) से लेकर सेंट जोहन के न्यूफाउंडलैंड (New found land) तक तार लगाना था। इस में चार सौ मील तक लगातार जंगल था इस में इन्हें सड़क और तार दोनों लगाने थे, दूसरे भाग में एक सौ चालीस मील रस्सी लगाने में बड़ी भारी मेहनत और परिश्रम का काम था।

बड़ा परिश्रम करके उसने अंग्रेज़ी राज्य से अपनी कम्पनी के लिये सहायता प्राप्त करली परन्तु कांग्रेस में इस की बड़ी विरुद्धता हुई और सभा में केवल एक से ही इन की सम्मति अधिक थी। बड़े २ जहाजों पर रस्सी लदी हुई थी। अभी पांच मील तक ही नारज्जु लगने पाई थी कि वह मशीन में उलझ गई और अलग हो गई। दूसरी बार परिश्रम किया और अभी दो सौ मील तक ही लगी थी कि बिजली की धारा बंद हो गई तब लोगों ने ऐसी उदासीनता से जहाज़ पर पैर रक्खा कि मानो मृत्यु के सामने जा रहे हैं। ज्योंही कि फील्ड आज्ञा देने को था कि रस्सी को काट दो कि एकाएक विद्युत-धारा आ गई। उसी रात को जब कि जहाज़ चार मील फी घण्टा के हिसाब से और धारा ६ मील फी घंटा के हिसाब से चल रही थी जहाज में

ब्रेक (Brake) लगाए गए और एक जहाज में एक भारी धक्का लगा और रस्सी टूट गई।

फील्ड कभी निरुत्साहित होने वाला नहीं था। ७०० मील लम्बे और केबिल [Cable] के लिए आज्ञा दी गई और एक बहुत योग्य पुरुष इस कार्य के लिए मशीन बनाने में लग गया। और मशीन के ठीक करने में इँगलैंड और अमरीका दोनों के आविष्कारकर्त्ता लगाए गए थे। अंत में बीच समुद्र में से रस्सी के दोनों सिरे मिला कर दोनों जहाज अलग २ हो गए एक आयरलैंड और दूसरा न्यूफाउन्ड लैंड को हर एक के पास यह अमूल्य रस्सी थी जिस से यह आशा की जाती थी कि वह दोनों महाद्वीपों को मिला देंगे। अभी यह जहाज एक दूसरे से तीन सो मील के अन्तर पर ही थे कि सांकर टूट गई। फिर वह रस्सी मिलाई गई परंतु अभी जहाज़ ८० मील की दूरी पर थे कि Current धारा बंद हो गई। तीसरी बार फिर रस्सियां मिलाई गईं परंतु फिर असफलता प्राप्त हुई!

कम्पनी के डाइरेक्टर लोग, महाजन और धन देने वाले लोग रुपया देने में भिझकते थे और महाशय फील्ड को छोड़ कर जो दृढ़ परिश्रम और अविराम अभ्यास करने वाला था और जिसने इस के लिए खाना पानी के बिना ही दिन रात काम किया, सब ने यह सम्पूर्ण उपाय [तजवीज] छोड़ दिया था।

तीसरी वार फिर परिश्रम किया गया और बिना किसी खटके के सफलता पूर्वक रस्सी लगा दी गई, और सात सो कोस समुद्र में खूब खबरें पहुँचाई गई कि फिर एकाएक (Current) विद्युत धारा बंद हो गई।

अब की बार केवल मिस्टर फील्ड और उसके दो एक मित्रों के हृदय में भरोसा शेष रह गया था, और उन्होंने ऐसा घोर परिश्रम किया कि जिसे देख लोग उन्हें ऋण देने के लिए उद्यत हो गए। इस बार फिर काम आरम्भ किया और थोड़ी देर सब बात भली भांति चलती गई, अंत में रस्सियां डूब गई और फिर न उठाई गई इस प्रकार एक वर्ष तक काम बंद रहा।

परन्तु मिस्टर फील्ड कब चुप बैठने वाला था! इन कठिनताओं का सामना करते हुए भी इस की आशाएं कब हताश हो सकती थी वह फिर एक नई कम्पनी के स्थापित करने पर लग गया और पहिले कहीं अधिक अच्छी (Cable) केबल (रस्सा) बनवाया और अपना काम आरम्भ कर दिया जो कि निम्न लिखित समाचार के साथ न्यूयोर्क को भेजा गया था समाप्त हुआ। (तार)

Hearts' Content.

हृदय का सन्तोष

जुलाई २७ सन् १८६६

आज प्रातः काल नौ बजे हम यहां पर आ पहुंचे। सब कुशलता से हैं। परमात्मा को धन्यवाद देते हैं कैवल (Cable) (रस्सा) लग गया है और भली भांति काम करता है।

साईरस डवल्यू फील्ड

पुराना कैवल भी उठा लिया गया और फिर जोड़ा गया। और अब दोनों बड़ी अच्छी तरह वर्षों के लिये अति लभादायक कार्य कर रहे हैं।

यह कहा जाता है कि उत्तीर्ण पुरुष स्वाभाविक शक्तियों अपने मित्रों व अच्छी अवस्थाओं की अपेक्षा अविराम अभ्यास के अधिक कृतज्ञ है विलक्षन बुद्धि परिश्रम की बाईं ओर रहा करती है। बड़ी २ शक्तियां भी व्यवसाय के सामने सिर झुकायेंगी विशेष ज्ञान आवश्यक है परन्तु अभ्यास उस से भी अधिक आवश्यक है।

एक चीनी विद्यार्थी बार २ निरुत्तीर्ण होने से निरुत्साह हो गया और उस ने निराशता के मारे अपनी पुस्तक फैंक डालीं परन्तु उसी समय उसने एक स्त्री को एक लोहे की कील को सुई बनाने के लिए पत्थर पर बार २ रगड़ते हुए देखा। इस दृश्य ने उस में एक प्रकार का उत्साह भर दिया और उसने पुस्तक उठा कर तुरंत ही पढ़ना आरम्भ कर दिया।

परिणाम यह हुआ कि चीन के तीन महान विद्वानों में से एक हो गया।

एक विद्वान् का कथन है कि यदि मैं एक दिन अभ्यास छोड़ देता हूँ तो मैं स्वयं अपने कार्य करने में अन्तर अनुभव करता हूँ। यदि दो दिन के लिए छोड़ देता हूँ तो मेरे मित्र जान लेते हैं। यदि एक सप्ताह के लिए, तो सम्पूर्ण संसार ही मेरी निरुत्तीर्णता को देख लेता है।

बैंजमन फ्रैंकलन अपने कार्य्य में एक अद्भुत भांति की लक्ष्य एकाग्रता रखता था। जब फिलेडेलफिया में उसने अपने छापेखाने का कार्य आरम्भ किया तो उस समय वहां उसे एक अति निपुण प्रति योगी का सामना करना पड़ा। एक दिन इसने उसे अपने कमरे में बुलाया और उसे रोटी के टुकड़े को जिसे उसने थोड़ी देर पहिले ही खाया था दिखा कर कहा जब तक तुम मुझ से कम व्यय में अपना निर्वाह नहीं कर सकते तब तक मुझे कभी भूखा नहीं मार सकते।

जब एक बार मिस्टर डिकिंस से सभा में अपना लेख पढ़ने के लिए कहा गया तब उसने उत्तर दिया—"मेरे पास समय नहीं है" क्योंकि जिस लेख को वह सभा में सुनाया करता था उसे अपने घर छः महीने पहिले से प्रति दिन एक बार पढ़ लिया करता था। उस ने कहा कि मैं आप को

विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे अपने आविष्कार, मेरे कुछ काम न आते यदि मुझ में साधारणतया से नम्र, शांत और बारम्बार अभ्यास करने की आदत न होती।

जितने बड़े २ लेखक हो चुके हैं वह सब दृढ़ता से काम करने के लिए प्रसिद्ध हैं उन के ग्रन्थ एक दम विलक्षण बुद्धि से भरे हुए मस्तिष्कों से नहीं निकल आए हैं, बल्कि वह बड़े परिश्रम से जब तक कि उन में एक प्रकार का रस नहीं आ गया है लिखे गए हैं।

रोबर्टब्रूस स्कोटलैंड में एक बड़ा प्रसिद्ध व्यक्ति हो गया है। इँगलैंड वालों से वह सात बार लड़ा परन्तु प्रत्येक बार वह हारता ही गया। अंत में निराश होकर अपने कमरे में बैठा हुआ यह सोच ही रहा था, हे भगवन्! मैंने सात बार बड़े परिश्रम से सैना इकट्ठी की परन्तु हारता ही गया। क्या सचमुच मेरे भाग्य में हार ही लिखी है यदि ऐसा है तो जीनेसे मरना ही भला है "इतने में क्या देखता है कि एक मकड़ी जाला पूर कर छत के लिए ऊपर चढ़ती है, परन्तु गिर पड़ती है, इस प्रकार उस ने सात बार छत पर चढ़ने का परिश्रम किया परन्तु ऊपर पहुँचने के पहिले ही गिर पड़ी इस के पश्चात् आठवीं बार फिर इस ने ऊपर चढ़ना आरम्भ किया और इस बार छत के ऊपर पहुँच गई। यह देखते ही रोबर्टब्रूस उछल पड़ा और बड़े ज़ोर से कहने लगा। जब

मकड़ी सात वार गिर कर भी फिर आठवीं वार ऊपर चढ़ सकती है तो मैं भी अब की वार अवश्यमेव विजय पाऊँगा और यह कह कर उस ने वड़े परिश्रम से सैना इकट्ठी की और विजय प्राप्त की।

मनुष्य को कभी निराश नहीं होना चाहिए, वार वार परिश्रम करने से अवश्मेव सफलता प्राप्त होती है।

प्यारे पाठको !

लुढ़कते हुए पत्थरों पर कभी काई नहीं लगती। लगातार धीरे २ चलने वाला कछुआ भी तेज़ से तेज़ परन्तु आलसी ख़रगोश से दौड़ में आगे ही निकल जाता है। वारह वर्ष तक प्रतिदिन एक घण्टे का अध्ययन हाईस्कूल की पूरी चार वर्ष पढ़ाई के वरावर हो जाता है। एक ही पुस्तक के बार २ पढ़ने से सहस्रों मनुष्यों को उच्च वना दिया है। वलवर कहता है "कि धैर्य्य, विजयियों का साहस है। यह दुर्भाग्य के विरुद्ध मनुष्यके लिए सवसे उत्तम गुण है। जातियों को और संस्थाओं को इसकी परमावश्यकता है।

परिश्रम और अभ्यास की अनुपस्थिति ही हमारी बहुत सी अनुत्तीर्णताओं का कारण है। इनके विना जो आज राव है वही कल रंक हो जाता है। रंक से राजा, निर्धन से धनवान, मूर्ख से विद्वान्, वलहीन से वलवान और नीच से उच्च बनो

के यही दो बड़े भारी साधन हैं। संसार में ऐसी कोई जाति या व्यक्ति नहीं जो इनके विना बड़ा बन गया हो। यह एक समय असम्भव को भी सम्भव कर सकते हैं। यदि तुम सच्चा सुख और आनंद चाहते हो तो कभी निराश न हो किंतु सदैव बारम्बार अभ्यास और परिश्रम करते रहो॥

इति।

चौथा प्रकरण

❀ तिरस्कृत समय की सम्भवता ❀

१—क्या तुम्हें जीवन प्यारा है, यदि है तो समय को व्यर्थ न गंवाओ क्योंकि समय से ही जीवन बनता है। (फ्रैंकलैन)

२—मैंने अपने समय को नष्ट किया, अब समय मुझे नष्ट कर रहा है, (कालोन यातो वयमेव याताः) [भर्तृहरि]

३—विश्वास रक्खो, कि समय की किफायतशारी जीवन में तुम्हें इतना लाभ पंहुँचावेगी कि जितना तुम स्वप्न में भी विचार नहीं सकते, परंतु इसकी नष्टता चाहे तुम कितने ही विद्वान् क्यों न हो गहन से गहन गड्ढे में पटक देगी॥

एक मनुष्य ने जो फ्रैंकलैन की दुकान के सामने घण्टे भर से घूम रहा था, मुनीम से जाकर पूछा "इस पुस्तक का क्या मूल्य है" "*एकडौलर" मुनीम ने उत्तर दिया।

---

* एक डौलर ३) रु० का होता है।

हां, "एकडौलर" इस आलसी ने कहा, क्या तुम इस से कम नहीं ले सकते हो! मुनीम ने फिर कहा—"इस का मूल्य एक ही डौलर है।" इस पर इस ग्राहक ने थोड़ी देर तक इस पुस्तक को उलटा पलटा और फिर देख भाल कर पूछा—"क्या महाशय फ्रैंकलैन अन्दर उपस्थित हैं?"

मुनीम ने उत्तर दिया—हां हैं। परंतु इस समय वे अपने काम मे लगे हुए हैं। इस पर ग्राहक ने कहा—अच्छा मैं उन से मिलना चाहता हूँ कृपया उन्हें यहां बुला लीजिए।

फिर क्या था फ्रैंकलैन बुलाये गए और ज्योंही वे समीप आए तब इस ग्राहक ने कहा—मिस्टर फ्रैंकलैन! इस पुस्तक का आप कम से कम क्या मूल्य ले सकते हैं।

फ्रैंकलैन—सवा डालर।

ग्राहक—सवा डालर! आप के मुनीम ने तो एक ही डौलर मांगा था।

फ्रैंकलैन—सच है। परंतु एक ही डौलर के लिए मैं अपने काम को छोड़ नहीं सकता था।

ग्राहक बड़ा अचंभित हुआ और फिर पीछा छुड़ाने के लिए, धीरे से बोला, अच्छा मुझे बताइये कि सचमुच न्यून से न्यून अब आप इस पुस्तक का क्या लेंगे!

फ्रैंकलैन—डेढ डौलर।

ग्राहक—दांतों तले अँगुली दबा कर क्यों! आपनें तो सवा डौलर ही मांगा था।

फ्रैंकलेन—आंखें बदल कर और बड़े गम्भीर स्वर से कहने लगा, हां उस समय मैं यही ले लेता परन्तु अब उस का यही मूल्य होगा। और आप जितना समय मेरा अधिक लेंगे, उतना ही मूल्य अधिक होता जायेगा।

ग्राहक ने चुपचाप डेढ डौलर रख दिया और पुस्तक के साथ यह पाठ लेकर कि किस प्रकार समय को धन में परिवर्तन करते हैं वहां से चल दिया।

इस ग्राहक की तरह समय को गँवाने वाले प्रत्येक स्थान पर हैं।

अमेरिका में एक टकसाल घर के एक कमरे के फर्श पर जहां सोने का लेन देन होता है एक जालिदार लकड़ी की चटाई बिछी रहती है। जब कमरे झाड़े जाते हैं तो यह चटाई उठाली जाती है। झाड़ने के समय वहां पर रेत में सहस्रों रुपयों के सोने के बारीक कण मिलते हैं। इस प्रकार इस टकसाल घर में इस जाली द्वारा सहस्रों रुपये बचा लिए जाते हैं। ठीक इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य के पास एक प्रकार की जाली है, जिस से वह यदि चाहे तो दिनों और घण्टों के छोटे २ भागों को जिन से यह जीवन बना है और जिन्हें बहुत से लोग योंही व्यर्थ खोते हैं संचय कर सकता है।

जो मनुष्य इन छोटे २ अवसरों, घण्टों, मिनटों और क्षणों रूपी द्रव्य को संचय करते हैं वे उस सफलता को प्राप्त कर लेते हैं जिसे देख कर आलसी और समय को नष्ट करने वाले पुरुष दंग रह जाते हैं॥

प्रत्येक दिन हमारे पास मित्र की भांति नाना प्रकार के मूल्य रत्नों को लेकर गुप्त भेष में आता है परन्तु जब हम उसका यथा योग्य सम्मान व प्रयोग नहीं करते तो वह चुपचाप चला जाता है और फिर लौट कर नहीं आता। प्रत्येक प्रातःकाल नए २ प्रकार के परमानन्द हमारे सामने उपस्थित करता है, परन्तु जब हम उन आनंदों को ग्रहण करने को आज और कल पर टालते हैं, तो परिणाम यह निकलता है कि दिनोंदिन हम उन्हें स्वीकार करने में असमर्थ होते चले जाते हैं।

प्यारे पाठको! किसी ने क्या अच्छा कहा है—"खोया हुआ धन परिश्रम और उपाय से फिर संचय किया जा सकता है, भूली हुई विद्या बार २ पढ़ने से फिर आ सकती है, बिगड़ी हुई आरोग्यता भी औषधि व व्यायाम आदि के प्रयोग से पुनः प्राप्त की जा सकती है, परंतु गया वक्त फिर हाथ आता नहीं।"

अरे भोजन करने में या संध्या होने में अभी पांच या सात मिनट की देरी है, पर अब क्या करें, यह शब्द साधारण से

हैं, जो प्रायः आज कल घर २ में सुनाई देते हैं, परंतु स्मरण रक्खो प्यारे नवयुवको ! बड़े २ स्मारक चिह्न, बड़े विशाल भवन, जिनको उन छोटे २ मनुष्यों ने जिन्हें ऊपर उठने के लिए कोई विशेष अवसर नहीं मिले हैं केवल इन्हीं टूटे फूटे बचे कुचे मिनटों से बनाए हैं जिन्हें हम व्यर्थ कह कर टाल देते हैं।

लीलावती अंक गणित, बीज गणित, और रेखा गणित आदि के कठिन से कठिन प्रश्नों के हल करने व उन के गुर और नियम बनाने के लिए समय पा लेती थी, पर कहां से ? इन्हीं बचे कुचे मिनटों में से ॥

महारानी विक्टोरिया राज्य के इतने बड़े भारी कामों को करती हुई बहुत सी भाषाओं के सीखने के लिए समय पा लेती थी, तो कहां से, इन्हीं बचे कुचे मिनटों में से ॥

मंडन मिश्र की स्त्री उभयभारती अपने पति और स्वामी शंकराचार्य्य के बीच में मध्यस्थ बनने और शंकराचार्य्य जैसे तत्त्व ज्ञानी को पराजय करने के लिए योग्यता उपलब्ध करने का समय पा सकती थी, तो कहां से, इन्हीं व्यर्थ मिनटों में से ॥

संसार में जितने बड़े मनुष्य हो गए हैं वे अपने समय को कभी नष्ट नहीं किया करते थे, उनका एक २ क्षण और एक २ पल अमूल्य रत्न था ॥

जब *ग्लैड स्टोन जैसा मनुष्य एक छोटी पुस्तक को जेब में रक्खे विना कभी बाहर नहीं जाता था कि कहीं एक मिनट भी भूल से व्यर्थ व्यतीत न हो जावे, तो क्या हमें जो साधारण योग्यता के भी पुरुष नहीं हैं इस अमूल्य समय को योंही नष्ट कर देना चाहिए ॥

उन स्त्रियों और पुरुषों का जीवन कितना घृणित व लज्जनीय है जिन्होंने दिन दो दिन, सप्ताह और महीनों की तो क्या चलाई, वर्षों को योंही व्यतीत कर दिया है जब कि इस महान पुरुष ने समय के छोटे से छोटे भाग को भी व्यर्थ नहीं जाने दिया था । बहुत से महान पुरुषों ने इतना मान, ऐश्वर्य्य और प्रताप इसी समय के खंडहरात से उपलब्ध किया है जिसे वह लोग जो अपनी सफलता पर अचम्भा करते हैं योंही नष्ट कर दिया करते थे ॥

निरार्थक व्यवहार से बचाया हुआ दिन भर में यदि एक घंटा भी उचित रीति से प्रयोग किया जावे तो वह साधारण से साधारण योग्यता रखने वाले पुरुष को भी, चाहे किसी एक विषय का पूर्ण विद्वान् बना देगा । केवल घंटा ही रोज़ दश वर्ष में एक मूर्ख से मूर्ख को भी पंडित बना देगा ।

---

* यह अँग्रेज़ी पार्लीयमेंट का मिनिस्टर था, पार्लीयमेंट में इस की बड़ी भारी चलती थी ।

एक घंटे के परिश्रम से मनुष्य इतना पैदा व उपार्जन कर सकता है जो उसको दो दैनिक, दो सप्ताहिक, दो मासिक समाचार-पत्र और एक दर्जन उत्तम पुस्तकों के खरीदने के लिए बहुत काफी हो। दिन भर में एक लड़का किसी पुस्तक के २० पृष्ठ भली भांति अध्ययन कर सकता है और इस प्रकार से वर्ष में सात सहस्र पृष्ठ या अठारह बड़े २ ग्रन्थों को समाप्त कर सकता है। दिन भर में एक घंटा एक अनजान पुरुष को एक प्रसिद्ध और महान पुरुष बना सकता है, नहीं २ बना चुका है। तब प्यारे पाठको, सोचो ! चौबीस घँटों में से दो, चार, हां छः २ घँटे जिन्हें हम प्रायः सोते उठते, खाते पीते आदि में प्रतिदिन व्यर्थ खो देते हैं कैसे २ महान अद्भुत और असम्भव कार्यों को कर सकते हैं।

कतिपय विद्यार्थियों ने समय के फ़ज़ूल भागों में से ही जिन्हें बहुत से बातों और गप्पों में ही खो देते हैं, उत्तम से उत्तम शिक्षा और विद्या उपलब्ध कर ली है। बहुत से मनुष्योंने एक २ पैसे की उचित बचत करके जिसे दूसरे जीभ के चटोरपने में ही खो देते हैं, हज़ारों और लाखों रुपये इकट्ठे कर लिए हैं। सच है—

कौड़ी २ जोड़ कर, निधन होत धनवान।
अक्षर २ के पढ़े, मूरख होत सुजान ॥

क्या हमारे नवयुवक अपने कामों में ऐसे मग्न हैं कि वे

स्वयं उन्नति के लिए चौबीस घण्टों में से एक घँटा भी नहीं बचा सकते ?

अमेरिका के एक प्रसिद्ध चमार चार्ल्स सी फ्रोस्ट (Charlse C. Forst) ने प्रतिदिन केवल एक घँटा स्वाध्याय करने का दृढ़ संकल्प कर लिया था। परिणाम यह निकला कि वह अमरीका में एक बड़ा भारी गणितज्ञ ही नहीं हो गया था बल्कि दूसरे विषयों में भी उस ने बड़ी योग्यता प्राप्त कर ली।

राजा भोज की सभा में एक पण्डित आया और उसने कहा—हे राजन्! मुझे आप अपने नगर में रहने की आज्ञा दीजिए, मैंने सब शास्त्रों उपनिषदों आदि का अध्ययन किया है क्योंकि मैं आपका न्याय और यश सुन आप का एक सच्चा नागरिक बन जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ। राजा ने यह सुन; कहा—पंडित जी! मैं आपकी योग्यता सुन कर बड़ा प्रसन्न हुआ हूँ और चाहता हूँ कि आप मेरे नगर में निवास करें। और फिर एक सिपाही को बुला कर आज्ञा दी जाओ यदि कोई मनुष्य मेरे नगर में अनपढ़ हो तो उसे यहां ले आओ ताकि उसके स्थान पर इन पण्डित जी को रक्खा जावे। राजा की आज्ञा पा सिपाही तुरंत ही बाहर गया और एक अनपढ़ की खोज में लग गया परन्तु जब कोई न मिला तो बड़ा हैरान हुआ और अन्त में एक कोली को जो कपड़ा बुन रहा

था अनपढ़ जान बिना कुछ पूछे ही पकड़ लाया। ज्यों ही वह राजा के सामने पहुँचा तो उसने सिर झुका कर कहा—महाराज! मुझे क्यों बुलाया है, कहिए आप की क्या आज्ञा है। इस पर राजा ने कहा—क्योंकि तुम अनपढ़ हो। इसलिए तुम्हारे रहने के लिए इस नगर में कोई स्थान नहीं और तुम्हारी जगह इन पण्डित जी को रक्खा जावेगा! कोली ने उत्तर दिया—राजन्, मैं आप की आज्ञा मानने को सर्वथा उद्यत हूँ क्योंकि राजा की आज्ञा मानना प्रजा का परमोधर्म्म है, परन्तु यह प्रार्थना है कि आपने यह कैसे जान लिया कि मैं निराक्षर भट्टाचार्य्य हूँ। और यह कह कर बहुत श्लोक कह सुनाए। सुनते ही राजा बड़ा अचम्भित हुआ और इतने ही में पंडित जी कहने लगे, अरे भाई कोली! तुम दिन रात तो ताना तानी में लगे रहते हो फिर तुमने इतनी विद्या कहां से प्राप्त की? कोली ने उत्तर दिया—यह सब एक घंटा प्रतिदिन की महिमा है। यद्यपि मैं दिन भर कपड़ा बुनता रहता हूं, परन्तु रात को एक घंटा रोज़ पढ़ने में लगाता हूँ इसके प्रताप से आज मैं एक अच्छे पण्डित का सामना कर सकता हूँ।

इधर राजा भी बड़ा प्रसन्न हुआ और निकालने के बदले उसने कोली को अपने विद्वत्सभा का महा मंत्री बना लिया॥

प्यारे पाठको! अब तो अपनी आंखें खोलो और इस कोली के जीवन से पाठ लेकर एक २ और आध २ घण्टे को

ठलुआ समझ कर गप्पों और ताश आदि के खेलने में नष्ट न करो।

संसार में जितने बड़े राजा, महाराजा, सेनानायक, गणितज्ञ, विज्ञानी, ज्योतिषी आदि हो गए हैं, वह कभी अपने समय के एक मिनट को भी व्यर्थ नहीं समझते थे। सम्राट नेपोलियन केवल चार घण्टा ही सोता था।

इस जगत में जितने महा पुरुष हो गए हैं, और हैं, वे एक २ क्षण और पल का भी लोभ करते हैं, सिसरो जो एक बड़ा तत्व ज्ञानी हो गया है कहा करता था, उस समय को जिसे बहुत से मनुष्य अपना शृंगार (बाल काढ़ने व कपड़ा सजाने) करने में लगाते हैं, मैं अपने अध्ययन में व्यय करता हूँ।

सीज़र का कथन है कि वह भयंकर से भयंकर लड़ाई में भी अपने तम्बू में बैठा हुआ अन्य बहुत सी बातें विचार सकता था। एक समय जब कि उस का जहाज समुद्र में डूबने लगा तो वह झट कूद पड़ा और किनारे की ओर तैरने लग गया। परन्तु वह अपने लेख को जिसे वह जहाज डूबने के समय लिख रहा था अपने साथ बड़ी सावधानता से ले आया।

वर्तमान समय कच्चे पदार्थ की नाईं है। इस में से जो चाहो सो तुम बनाओ। कभी आगे और पीछे भूत और

भविष्यत के स्वप्न न देखो, बल्कि प्रत्येक क्षण को पकड़ लो और उसी से अपना पाठ लो।

प्रायः यह तो सभी ने देखा है कि कपड़े के कारखानों में जहां पर कपड़ा बुना जाता है यदि जाल का एक धागा भी टूट जाय तो बुनने वाले का वेतन काट लिया जाता है। परन्तु हम नहीं जानते कि जीवन के बड़े जाल में धागा टूटने की हानि को कौन भरेगा। प्रत्येक क्षण और पल रूपी धागे से हम अपने जीवन रूपी जाल को बुनते हैं। यदि उस में से एक क्षण भी नष्ट हो गया तो बस समझ लो कि जीवन रूपी जाल को बड़ा भारी धक्का लग गया, तिस पर भी हम नहीं जानते, कि कौनसा सुनहरी धागा है और वह कब आयेगा, जो जीवन रूपी जाल को सुन्दर और सुनहरी बनायगा॥

कोई संरक्षक इस बात की परवाह नहीं करता कि एक कार्य्यालय व पाठशाला में एक नवयुवक काम करने व पढ़ने के समय के पश्चात् किस प्रकार अपना जीवन व्यतीत करता है। क्या वह ठीक समय पर छात्रालय (बोर्डिंग हाऊस) या घर पर उपस्थित होता है? क्या वह ठीक समय पर भोजन करता है? क्या उसके रहने व सोने का समय किसी नियम के अनुसार चलता है? क्या वह व्यायाम आदि करता है या गप्पों में व खेल कूद में ही अपना सारा समय नष्ट कर देता है। इन बातों की आजकल किसे परवाह है। परन्तु स्मरण

रक्खो, मेरे प्यारे पाठको ! यही समय है जो मनुष्य के जीवन को बनाता वा बिगाड़ता है। हमारे बहुत से नवयुवक इसी समय के पश्चात् (पाठशाला वा कार्य्यालय के) नष्ट हो जाते हैं जब कि बहुत से इसी सन्ध्या समय में सामाजिक वा राजनैतिक कार्य्यों को करके संसार में नाम और यश को प्राप्त करते हैं ॥

पाठक-वृन्द ! समय ही धन है इसे छोटा नहीं समझना चाहिए, किंतु एक घँटे के नष्ट हो जाने में उतना ही दुःख अनुभव करना चाहिए जितना कि एक नोट वा रुपया के खो जाने में होता है । समय के नष्ट हो जाने का तात्पर्य्य केवल एक धन का नष्ट हो जाना ही नहीं, बल्कि शक्ति, बल और आचार का नष्ट हो जाना है । इस का तात्पर्य्य उस सुनहरी अवसर को खो देना है जो फिर लौट कर नहीं आ सकता। इस लिए हमें एक २ मिनट के व्यय करने में सावधान रहना चाहिए, क्योंकि हमारा भावी जीवन इसी पर निर्भर है ॥

किसी महात्मा का वचन है कि उच्च वा नीच होना धनवान वा धनहीन होना, राजा वा रंक होना, भला वा बुरा, विद्वान् वा मूर्ख होना और सुखी वा दुःखी होना सब हमारे हाथों में है ।

यदि हम सचमुच धनवान्, विद्वान् और बलवान् होना चाहते हैं तो एक २ क्षण को भी, जिसे हम ठलुआ समझते हैं व्यर्थ न जाने दें, क्योंकि :—

गया समय फिर हाथ आता नहीं ।

॥ इति ॥

पांचवां प्रकरण

॥ सदाचार बल ॥

आचार हीनं न पुनन्तिवेदा यद्यपि धीतासः षड्भिरंगे

आचार हीन पुरुष को वेद भी पवित्र नहीं कर सकता चाहे उसने उन्हें ६ अंगों के साथ ही क्यों न पढ़ा हो।

सदाचार एक महान् शक्ति है, यही सब से बड़ा बल है, यह मित्र बनाता है, द्रव्य संचय करता है, चारों ओर से हमारी सहायता करता है और धन, धर्म और सुख के लिए सीधा मार्ग खोलता है। सदाचार वह हीरा है जो सम्पूर्ण दूसरे पत्थरों को काट देता है।

ठंडी २ हवा चल रही है। शीत के मारे लोग कांप रहे हैं। निर्धन मनुष्यों का तो वस्त्र न होने के कारण नाक में दम आ गया है। ऐसे समय में एक छोटा सा लड़का जिस के पैर नँगे हैं, देह पर फटे पुराने गूदरे लदे हुए हैं जाड़े के मारे चहरा नीला पड़ गया है। परन्तु तो भी वह बाज़ार के एक कोने में खड़ा हुआ बड़ी गम्भीर और करुणा भरी बोली में कह रहा है—

लड़का—महाशय जी! लीजिए, कुछ दियासलाई मोल ले लीजिए।

बाबूजी—नहीं नहीं, मुझे कोई आवश्यकता नहीं है।

लड़का—बक्स को दिखला कर, लीजिए, इस का मूल्य केवल एक पैसा है।

बाबूजी—मानता नहीं! मैंने तुम से एक बार कह दिया कि मुझे कोई आवश्यकता नहीं।

लड़का—अच्छा; ख़ैर, मैं आपको एक पैसे में दो बक्स दे दूँगा।

बाबूजी ने अपना पीछा छुड़ाने के लिए कहा—अच्छा लाओ तुम नहीं मानते तो मैं लिए लेता हूँ। परन्तु जब उन्हों ने देखा कि जेब में भान नहीं है तो कहने लगे—इस समय मेरे पास भान नहीं है, मैं कल मोल ले लूँगा। इस पर लड़के ने कहा—नहीं नहीं, आज ही खरीद लीजिए। मैं अभी दौड़ जाऊंगा। क्योंकि मैं आज दिन भर से भूखा हूं। इस पर मैंने उसे एक रुपया दे दिया और वह दौड़ गया। मैं थोड़ी देर के लिए ठहरा रहा! परन्तु कोई लड़का लौट कर नहीं आया। इस लड़के के चहरे से ऐसा ज्ञात होता था कि वह एक सच्चा लड़का था। इस लिए मैंने अपने मन में कभी उस के विषय में बुरा विचार नहीं किया।

नोट—यह हाल इस पुरुष ने एक समाचार-पत्र में छपवा दिया था

शाम को बड़ी देर के पीछे मेरे एक नौकर ने आकर कहा—स्वामिन्! एक छोटा सा लड़का खड़ा हुआ है और वह आप से मिलना चाहता है।

जब वह लड़का अन्दर आया तो मुझे ज्ञात हुआ कि यह उस लड़के का जिसे मैंने एक रुपया दिया था छोटा भाई है, परन्तु वह उस लड़के से भी अधिक दीन और दुःखी जान पड़ता था। थोड़ी देर तक वह अपने गूदड़ों को टटोलता रहा मानो कि वह कुछ ढूँढ रहा है फिर उसने पूछा—क्या आप वही महोदय हैं जिन्हों ने सैंडी से दियासलाई खरीदी थी! यह लीजिए शेष दाम, सैंडी आ नहीं सकता था। वह बीमार है, एक गाड़ी उसके ऊपर से निकल गई और उसकी हड्डियां टूट गईं। उसके पास से दियासलाई के बक्स और दाम गिर गए। उसकी दोनों टांगें टूट गई हैं और डाक्टर कहता है कि वह मर जावेगा। इसी कारण से वह आप के पास नहीं आ सका। इतना कह कर उसने दाम मेज़ पर रख दिए और वह फूट २ कर रोने लगा। मैंने उसे धीरज दिलाया और उसके साथ सैन्डी को देखने के लिये चल दिया॥

जब मैं वहां पहुँचा तो ज्ञात हुआ कि उस के माता पिता दोनों मर गये हैं और वे दोनों अपनी दीन दुखिया मौसी के पास रहते हैं। पास ही सैन्डी घास फूंस पर पड़ा हुआ है। ज्यों ही मैं वहां पहुँचा सैंडी ने मुझे पहिचान लिया और

कहा—महाराज! मैंने वह रुपया भुना लिया था और लौट कर आ रहा था कि यकायक घोड़े ने लात मारी और मेरी दोनों टांगें टूट गईं। अरे रवी, अरे भईया, अब मैं तो मर रहा हूँ पर मेरे मरने पर तुझे कौन पालेगा। अरे भाई! अब तू क्या करेगा॥

तब मैंने उस मरते हुए लड़के का हाथ पकड़ लिया और उस से कहा—तुम कोई चिंता न करो मैं इसका पालन पोषण करूँगा। वह मुझे समझ गया और इस तरह टकटकी बांध कर मेरी ओर देखने लगा मानो कि मुझे धन्यवाद दे रहा है थोड़ी ही देर में उस की आंखें मुँद गईं और वह परलोक सिधार गया॥

परमात्मा इस दीन मरते हुए छोटे से लड़के द्वारा भी अपनी अद्भुत माया का परिचय देता है। यद्यपि ये लड़का नहीं जानता था कि वह कहां जायगा। परन्तु उन आदमियों में से जो गाड़ियों में बैठ कर ऐसे लड़कों को कुचल देते हैं वह कहीं अधिक ईमानदारी, दयालुता, शीलता आदि गुणों को जो स्वर्ग को स्वर्ग बनाने वाले हैं अधिक जानता था। सदाचार चाहे बच्चे में भी क्यों न हो सदैव सराहनी है।

आज कल जब धनवानों की चारों ओर प्रतिष्ठा और पूछ है। जब टका ही धर्म्म है, टका ही कर्म्म है, टका ही बड़ा

पद है और जब बिना टका के टक्करें और ठोकरें खानी पड़ती हैं जैसा कि :—

टका धर्मष्टका कर्म टका हि परं पदम् ।
यस्य गृहे टका नास्ति हा टका टकटकायते ॥

परंतु तो भी एक निर्धन लेखक वा कालेज के प्रधान के चाहे उसने समाजों मे सदैव साधारण कपड़े ही क्यों न पाहिने हों, मरने पर शोक से समाचार पत्रों के पृष्ठ के पृष्ठ भरे जाते हैं और जब कि सैकड़ों लखपाति और करोड़पतियों को कोई नहीं पूछता है। कारण यह है कि मनुष्य का मान व सत्कार सदाचार से होता है न कि धन से। सदाचार बिना धन ही केवल उन्मत्तता ही उत्पन्न करता है, किसी ने क्या अच्छा कहा है—

*कनक कनक ते सौगुणी मादकता आधिकाय ।
यह खाये बौरात है, वह पाये बौराय ॥

संसार में सदाचार की ही प्रतिष्ठा होती है। सदाचार लोगों पर जादू का सा प्रभाव डालता है।

एक समय जर्मनी का राजकुमार, जिस ने सदाचार के कारण लोगों के मनों को मोह लिया था, जाड़े के दिनों में

* कनक = सोना और धतूरा।

5993

रूस की भयानक बर्फ़ीली चट्टानों से अपने सिपाहियों के साथ भाग कर आ रहा था। रात को भूखे, थके, मांदे लोग एक पशुओं के घर में सो रहे थे। प्रातःकाल को राजकुमार उठा तब उसने आप को गर्म और बड़ी अच्छी अवस्था में पाया। चारों ओर से ठण्डी २ हवा का सन्नाटा सुनाई दिया और उस ने अपने साथियों को पुकारा परंतु कोई उत्तर नहीं आया। जब उठ कर देखा तो ज्ञात हुआ कि सब मरे पड़े हुए हैं उन की देह बर्फ़ से ढकी हुई है और कि उनके सारे कपड़ों का ढेर इस के शरीर पर लदा हुआ है। सब लोगों ने अपनी जानें उसके लिए न्यौछावर कर दीं।

कैनिंग लिखता है, अधिकार और उन्नति पाने के लिये सदाचार ही मेरा मार्ग होना चाहिये। मैं किसी दूसरे पथ से नहीं जाऊंगा। और मुझे पूरा विश्वास है, कि यदि इस मार्ग से अति शीघ्र वांच्छित स्थान पर नहीं पहुंचूँगा परन्तु पहुंच तो अवश्यमेव जाऊंगा।

एक महात्मा का कथन है मैं उन मनुष्यों के अतिरिक्त किसी को भी जिन्हों ने मनुष्य जाति की सेवा नहीं की है चाहे वे कोई क्यों न हों, बड़ा आदमी नहीं समझता।

कोई मनुष्य बड़ा है व छोटा, इस बात से नहीं जाना
जाता कि उस के पास क्या है, वह कितना
बड़ा है बल्कि इस बात से जाना जाता
है कि वह क्या करता है ॥

संसार में वह मनुष्य प्रतिष्ठा करने योग्य नहीं है जो अपने जीवन में उत्तीर्ण नहीं हुआ है। और वह पुरुष भी जो केवल खाने पीने और धन कमाने के लिये संसार में रहता है उत्तीर्ण नहीं है। ऐसे पुरुष होने से संसार को कोई लाभ नहीं। इस ने दीन दुखियों की आंखों से आंसू नहीं पोंछे। इस में कोई अन्तःकरण नहीं उस ने सोने के अतिरिक्त किसी देव की पूजा नहीं की।

संसार केवल उन्हीं मनुष्यों की ओर देखता है जो बेचे जाने के लिए नहीं हैं, जो ईमानदार हैं नीचे से ऊपर तक एक से ही दिखाई पड़ते हैं। जिनका अंतरात्मा सच्चा है जो दुःख में सुख, आपत्ति और आनंद में बेधड़क सत्य बोल सकते हैं जो आलस में नहीं पड़े रहते बल्कि सदैव देश की सेवा में तत्तपर रहते हैं, जो अपने कर्तव्य को जानते हैं और सदैव उसकी पूर्ति में लगे रहते हैं।

प्रत्येक देश में ऐसे स्त्री पुरुष उपस्थित हैं जो सुनाने के पहिले ही विजय को प्राप्त कर लेते हैं। वे अपनी योग्यता

अनुसार सब पर प्रभाव डालते हैं। बताओ उन लोगों के पास औरों पर प्रभाव डालने का कौनसा रहस्य है? सदाचार में विश्वास रखना और उसका अनुसरण करना सब के लिए स्वाभाविक है। सदाचार एक प्रकार की शक्ति है। सदाचारी सीज़र का रोमंस पर कभी इतना प्रभाव नहीं पड़ा था जितना कि उसके मरते समय। इस समय उसके शरीर का एक २ घाव मुँह बनकर उस के लिए अपील कर (बोल) रहा था॥

जनरल शेरोडियन के विषय में यह कहा जाता है कि यदि उसके जीवन में कोई पद्धति होती तो वह सारे संसार पर शासन कर गया होता। कितने थोड़े नवयुवक इस बात को अनुभव करते होंगे कि जीवन में सफलतायें इस बात पर निर्भर नहीं कि हम क्या जानते हैं बल्कि इस बात पर कि हम क्या करते हैं। यह सदाचार था न कि योग्यता जिसने वाशिंगटन और लिंकन को अमेरिका का प्रधान बना दिया था।

लिंकन सदैव अपने आचार को बनाने के लिए प्रयत्न करता था। उसके सहयोगी वकील उसे "अत्याधिक ईमानदार" कहा करते थे। कोई भी पदार्थ उसे झूठे अभियोग (मुकद्दमे) को लेनें के लिए उतारू नहीं कर सकता था। या उसे जब यह बात ज्ञात हो जाती थी कि लिया हुआ मुकद्दमा झूठा है तो वह उसे तुरन्त ही छोड़ देता था। एक मुकद्दमा के ऊपर उसने बड़ी देर तक सिर मारने के पीछे ५००) रु० को जो

उसने अगाऊ ले लिए थे उस स्त्री को लौटाते हुए कहा— देवी ! आप के अभियोग लटकाने के लिए कोई खुँटी नहीं । "परन्तु आपने तो ५००) रु० तो केवल दिखाई के ही लिए थे। फिर मुझे क्यों लौटाते हो" इस स्त्री ने कहा—नहीं २, लिंकन ने उत्तर दिया यह ठीक नहीं, मैं अपने कर्तव्य के करने के लिए कभी महिनताना नहीं ले सकता । हां, यदि मैं इस मुकद्दमे को आगे चलाता तो दूसरी बात थी ॥

धन संग्रह करने, यश को पाने, व उच्च से उच्च अधिकार पाने से यदि कोई बड़ी वस्तु है तो सदाचार है । इस के बिना धन धान्य, कला कौशल, यौवन और सुन्दरता होने पर भी बहुत सी जातियां दिन प्रतिदिन अवनति को ओर जा रही हैं ॥

फ्रांस के चौदहवें सम्राट लूई ने अपने मंत्री से पूछा कि क्या कारण है कि मैं इतने बड़े देश फ्रांस पर राज्य करते हुए भी छोटे से देश हालेंड को भी नहीं जीत सकता । मंत्री ने उत्तर दिया—"किसी देश का बड़प्पन उस देश की लम्बी चौड़ी भूमि पर निर्भर नहीं है किंतु वहां के लोगों के सदाचार पर निर्भर है ।

महान् पुरुषों का सदाचार ही जाति का दहेज है । महान् पुरुषों के जीवन का अनुकरण करने से सैकड़ों नवयुवक

उन्नत हो जाते हैं। यदि किसी देश के महान् पुरुषों को उस में से निकाल दें तो ईंट पत्थर के अतिरिक्त वहां कुछ भी शेष नहीं रहता ॥

भारतवर्ष में से यदि राम, कृष्ण, हरिश्चन्द्र, दयानंद आदि जैसे महानुभावों को निकाल दिया जावे तो यहां पर जंगलों के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई न पड़ेगा।

इसी प्रकार यदि अमेरिका और इँगलैंड में से वाशिंगटन लिंकन, ग्रांट, न्यूटन, शेक्सपियर, मिल्टन, पिट, बर्क और ग्लैडस्टोन आदि को निकाल दिया जावे तो अमेरिका अमेरिका और इँगलैंड इँगलैंड कदापि नहीं रह सकता। प्रत्येक महान् पुरुष जाति के एक २ अंग में हड्डियों का काम दे रहा है। यद्यपि इटली सहस्रों वर्षों से अवनति में डूब रहा है परन्तु डेंटे का नाम अब भी प्रत्येक की जिह्वा पर है ॥

हमारा प्रत्येक काम, प्रत्येक शब्द और प्रत्येक विचार हृदय के ऊपर प्रभाव डालते हैं। छोटे २ अवसर और खोया हुआ समय हमें पीछे से दुःखदाई प्रतीत होता है। अच्छे के साथ रहने से हम अच्छे बन जाते हैं और बुरे के साथ रहने से बुरे ॥ सच है—

संगति कीजे साधु की, हरे और की व्याधि।
ओछी संगति क्रूर की, आठों पहर उपाधि ॥

इस लिए हमें सदैव शुद्ध और उच्च विचार अपने सामने रखना चाहिए क्योंकि जैसा हम विचार करते हैं वह पक्का होते २ आचार में आने लगता है, जब वह आचार में आ गया तो फिर छिप नहीं सकता। एमरसन का कथन है आचार सर्वत्र जाना जाता है। चोरी से मनुष्य कभी धनवान नहीं हो सकता, दान देने से पुरुष कभी निर्धन नहीं हो जाते। और हत्या पत्थर की भीत से भी चिल्ला उठती है। झूठ अहंकार ममत्व आदि से मिली हुई बनावटी बात अंत में परिणाम को बिगाड़ देती है परन्तु सच बोलो प्रत्येक अँग तुम्हें आगे बढ़ने के लिए सहायता देगा।

सदाचार निर्धन मनुष्य की पूँजी है।

मिश्र के एक राजा के विषय में लिखा हुआ है—मैंने कभी किसी लड़के को हानि नहीं पहुँचाई। मैंने किसी विधवा को नहीं सताया या किसी गवाले के लड़के के साथ बुरा बर्ताव नहीं किया। मेरे समय में कोई भी भिकारी नहीं था। कभी कोई भूखा नहीं मरा। जब मेरे राज्य में अकाल पड़ा तो मैंने स्वयं देश को जोता और देश-वासियों को अनाज दिया। अकाल में भी कोई भूखा नहीं मरा प्रत्येक विधवा यह अनुभव करती थी कि मानों उसका पति जीवित है। क्या आज कोई इस सभ्य समय में भी यह कह सकता है।

संसार में अभी ऐसे मनुष्य हैं जिन्होंने ईमानदारी ही को अपना साथी बनाया है। उनके प्रत्येक कार्य्य में यह पाई जाती है। उनके शब्द इसे प्रकाशित करते हैं। वे इस से परिपूर्ण हैं वे इसे चाहते हैं उनके लिए यह देवता समतुल्य है। सोना और राजासिंहासन का लालच उन्हें इसे छोड़ने के लिये उद्यत नहीं कर सकता! इसी से सुन्दर, वीर, सत्य-व्रत पराक्रमी और उच्च मनुष्य बनते हैं।

कोई भी मनुष्य कभी सच्ची उच्चता को प्राप्त नहीं कर सकता जब कि उसने यह अनुभव नहीं कर लिया हो कि उसका जीवन उस जाति से सम्बन्ध रखता है जिस जाति में परमात्मा ने उसे उत्पन्न किया है। परमात्मा ने मनुष्य जाति के लिए हमें सिरजा है॥

इति॥

छटा प्रकरण

एकाग्र-शक्ति

एक हि साधे सब सधें, सब साधे सब जाय।
जो तू सींचे मूल को, फूले फले अघाय ॥

मैं केवल इसी कार्य्य को करता हूँ। (सैंटपाल)

जितना अधिक मैं जीता हूँ उतना ही अधिक मेरा यह विचार पक्का होता जाता है कि वह वस्तु जो दो मनुष्यों में, बलवान व बलहीन, छोटा व बड़ा होने का अंतर लाती है वह केवल एकाग्र चित्तता ही है। (बक्सटन)

वह मनुष्य जो अपने जीवन में केवल एक और एक ही वस्तु को खोजना आरम्भ करता है वह उसको मरने से पहिले ही प्राप्त करने की आशा कर सकता है परंतु वह जो सब वस्तुओं को एक साथ ही ढूँढता है, चाहे कहीं पर चला जावे, आशा के बदले में निराशा ही पावेगा।

रथमल वाला मैं एक नगर में अँग्रेज़ी सामान बेचा करता था। परन्तु पीछे से एक बड़ा भारी सौदागर

वहां आ बसा, जिस ने सारे बाज़ार को अपना बना लिया। पहिले तो वह कृपा करके अपना सामान मुझे दे दिया करता था पर फिर किसी प्रकार से मुझ पर अप्रसन्न हो गया और मुझे नमूने दिखाने से भी मने कर दिया। तब तो मैंने अपने पिता से कहा यहां पर रहने के लिए हमारे लिए अब स्थान नहीं है, हमें अब इंगलैंड को जाना चाहिए और यह कह कर झट उसी समय मैं वहां से चल दिया, ज्योंही कि मैं इंगलैंड के समीप पहुँचता जाता था, मुझे सामान सस्ते मिलते थे जब मैं मैनचैस्टर पहुंचा वस्तुयें ऐसी सस्ती थीं कि मैं ने अपना सारा रुपया लगा दिया और मुझे बड़ा लाभ हुआ।

यह सुनकर एक मनुष्य ने कहा मैं आशा करता हूं कि तुम्हारे लड़के अन्य अधिक आवश्यक बातों को छोड़ कर धन और व्यौपार बहुत नहीं चाहते हैं। मुझे विश्वास है कि तुम इसे नहीं चाहोगे॥

मुझे भरोसा है कि मैं इसे पसंद करूंगा रथमल ने उत्तर दिया मैं चाहता हूं कि वे तन मन धन से व्यौपार में लग जावें क्योंकि आनंद पाने का यही एक मार्ग है। फिर उस सराफ को आकर्षित करके उसने कहा" ओ नवयुवक! एक ही काम में लगे रहो! सर्राफी में ही लगे रहो। और तुम देश में बड़े भारी सर्राफ, हो जाओगे। परन्तु हो जाओ केवल

एक ही सराफ साहूकार, सौदागर या कुछ और कार वाले, शीघ्र ही तुम्हारा नाम समाचार पत्रों में प्रकाशित हो जावेगा ॥

वर्तमान समय वेमन किए बहुत से कामों को नहीं बल्कि भली भांति से किए हुए एक ही काम को चाहता है । वह मनुष्य जो चारों ओर लगता है कभी सफलता को प्राप्त नहीं कर सकता ॥

उन दो आदमियों के काम के परिणाम (मिकदार) में जो सफलता व असफलता को प्राप्त करते हैं बड़ा भारी अन्तर नहीं होता है, यदि अन्तर होता तो ध्यान-पूर्वक और सिर उठा कर काम करने में होता है ॥

बहुत से लोग जो बुरी तरह फेल व निरुत्तीर्ण होते हैं। वे उतने काम से जो उत्तीर्ण वा पास होने के लिये आवश्यक है अधिक काम करते हैं परन्तु वे जो कुछ करते हैं वह लप झप से किया करते हैं एक ओर याद करते हैं तो दूसरी ओर भूलते जाते हैं, एक ओर उनका काम बनता जाता है तो दूसरी ओर बिगड़ता जाता है वे छोटी २ बातों या घटनाओं का शुभावसर नहीं बना लेते । उन से दीखती हार जीत बना लेने की शक्ति नहीं होती। वे कोरी (खाली) बिना धागे के ही ताना पूरी करते रहते हैं और अतः वास्तविक जीवन का जाल कभी नहीं बुना जाता है ॥

यदि तुम उन में से एक को भी पूछो कि तुम्हारे जीवन का उद्देश्य क्या है, तुमने अपने सामने क्या लक्ष्य रक्खा है। तो वह उत्तर देगा—"मैं नहीं जानता कि मुझे कौनसा काम फलेगा या मेरे लिए कौन सा काम ठीक है परन्तु मुझे कुछ न कुछ करने पर भरोसा है। मैं ने इरादा कर लिया है कि दिन रात जीवन भर पृथ्वी को खोदता रहूँगा मैं इतना जानता हूँ कि सोना चांदी या कम से कम लोहा तो मुझे मिल ही जायगा"॥

परन्तु मैं उन्हें बड़े बल पूर्वक कहता हूँ नहीं ! तुम्हारे पल्ले कुछ भी नहीं पड़ेगा। क्या कोई बुद्धिमान् पुरुष बिना जाने कि खान कहां पर है; और बिना विचारे कि उसे क्या ढूँढना है सारे महाद्वीप व भूमंडल को खोदना आरम्भ करेगा" ?

वह मनुष्य जो सदैव यही देखता रहता है कि मैं क्या करूँ मैं क्या कर सकता हूँ ! कुछ भी नहीं कर सकता। यदि तुम किसी बात के पीछे विशेष लक्ष्य नहीं रखते तो ना के अतिरिक्त कुछ भी नहीं पा सकते। हमें वही मिलता है जिसे हम मन लगा कर खोजते हैं॥

यह अकेली शहद की मक्खी ही नहीं है जो फूलों से देखती है परंतु यह केवल शहद की मक्खी ही है जो उन से शहद लेकर ही उड़ती है। सैकड़ों कीड़े और मकोड़े

मनुष्य और पशु जिन्होंने अपने सामने कोई लक्ष्य नहीं रक्खा फूलों को देखने के सिवाय उन से कुछ प्राप्त नहीं करते॥

*चाहे हमने युवा अवस्था में कितना ही कठिन परिश्रम

---

*नोट—भारत वर्ष के हमारे सैकड़ों कालेज और स्कूलों में पढ़ने वाले नवयुवक बिना इस बात के निर्णय किए कि उन्हें विद्याध्ययन समाप्त करने के बाद क्या करना है अँधाधुँध पढ़ना आरम्भ कर देते हैं, यही कारण है कि कठिन से परिश्रम करने, दिन रात लम्पों के सामने सिर पटकने; किताबों के कीड़े बनने और मां बाप को त्यागने, धन धाम को नष्ट करने आरोग्यता और सुख को तिलांजुलि देने पर भी जूतियां चटकाने, चश्मा लगाने, बाबू कहलाने, और नकली साहब बनने के अतिरिक्त कुछ भी पल्ले नहीं पड़ता है। सैकड़ों और सहस्रों बी०ए० और एम०ए० पास पचास और साठ २ रुपयों पर महीनों और वर्षों तक सूखी प्रतीक्षा करने पर भी आसाम से लेकर सिंध और हिमालय से लेकर रास कुमारी अंतरीप तक मारे २ फिरते हैं जब कि फ्रांस और जर्मनी, इँगलैंड और अमरीका आए हुए ग्रज्यूवेट आते ही अच्छे २ पदों को पाते हैं जब कि छोटे २ दुकानदार भी जिन्होंने अपने सामने कुछ लक्ष्य रख लिया एक अच्छी आमदनी को कमाते हैं। आओ शिक्षित भाइयो! आज से प्रण करलें कि अपने कछु न कुछ उद्देश रखने के पश्चात् ही कार्य्य-क्षेत्र में पैर रक्खेंगे॥ (लेखक)

क्यों न किया हो, परन्तु यदि हमारे सामने भविष्य के लिए कोई लक्ष्य नहीं तो यह सम्भव नहीं कि हम को फिर कोई ऐसा शुभ दिन आवे कि जिस में हम किसी उच्च अवस्था को प्राप्त कर सकें॥

किसी ने सच कहा है कि उस केवट (मल्लाह) के लिए जो यह नहीं जानता कि उसे कहां जाना है वायु कभी अनुकूल नहीं चलती है ॥

कारलाईल कहता है कि निर्बल से निर्बल मनुष्य भी अपनी शक्तियों को एक विषय की ओर लगा कर अपने उद्देश्य में कुछ न कुछ सफलता प्राप्त कर सकता है परन्तु बलवान् से बलवान् पुरुष भी अपनी शक्तियों को चारों ओर बहुत से कार्य्यों में विभाजित करके किसी एक काम के करने में भी समर्थ नहीं हो सकता। पानी की बूँदे लगातार चट्टान के ऊपर गिरकर उस में छेद कर मार्ग बना सकती है। परन्तु शीघ्रता और ज़ोर से इधर उधर चलने वाली धारायें इतना भयंकर नाद करने पर भी पीछे कोई चिह्न नहीं छोड़तीं॥

एक धर्म्मोपदेशक का कथन है—" कि मैं जब छोटा था तब यह समझा करता था कि यह गड़गड़ाहट (Thunder) (बिजली) है जो मनुष्यों को मार देती है परंतु बड़ा होने पर मुझे ज्ञात हुआ कि यह बिजली (Lighteing) है जो

गिर कर मनुष्यों को मार देती है। इस लिए अब मैंने विचार कर लिया कि मैं गड़गड़ाहट व घोषणा कम किया करूँगा परंतु चमकूँगा अधिक॥

गड़गड़ाहट कम करने और अधिक प्रकाश करने व चमकने का प्रयत्न करो वह मनुष्य जो एक ही काम को जानता है पर उसे सब से अधिक उत्तमता के साथ कर सकता है तो चाहे छोटे से छोटा काम करने वाला वह ही क्यों न हो तुरंत नाम पालेगा। यदि वह कोली है और अपनी शक्तियों को एकाग्र करके सब से अच्छी गजी बुन सकता है तो सारी जाती का हितकारी है और सब लोग उसको वैसा मानते हैं॥

जो मनुष्य अपनी सम्पूर्ण शक्तियों को एकाग्र करके तन मन धन से किसी अच्छे कार्य्य करने में लगा सकता है तो वह कभी भी सारे काम में असफल नहीं हो सकता। छोटी २ गोलियों को पिघला कर एक बड़ा भारी गोला बना लो फिर वह चार आदमियों के शरीरों में होकर पार जा सकता है, सूर्य की किरणों को सूर्य क्रांति मणी (आतशी शीशा) के केन्द्र, स्थल में होकर निकालने से वह बड़ी आसानी से आग जला सकती है परंतु यदि यह किरणें एक ही बिंदु पर नहीं डाली जाती हैं तो गर्मियों में भी आग लगाने की तो क्या झुलसा भी नहीं सकती। ठीक इसी प्रकार से वह आदमी

भी जो एक ही काम को नहीं करता सब ओर हाथ फेंकता है, सब सामान होने पर भी कुछ नहीं कर सकता ॥

जाति के बड़े २ नेता एकाग्र चित्त वाले ही होते हैं वे जब तक कि उन्हें सफलता नहीं मिल जाती एक ही स्थान पर चोट लगाते रहते हैं, आज कल भी उत्तीर्ण वहां मनुष्य हुए हैं और होते हैं जो अपने सामने एक ही आदर्शभाव, एक ही स्थिर उद्देश्य और एक ही लक्ष्य रखते हैं छिन्न भिन्न २ भाव ही भारतीय जीवन में एक बड़ी भारी त्रुटि है। यहां पर बहुत से मनुष्य ऐसे मिल सकते हैं जो एक नहीं, दो नहीं, बल्कि बहुत सी भाषाओं को जानते हैं पर वे अपने पास एक में भी प्रकाशित करने के लिए भाव नहीं रखते सिडिनी स्मिथ कहा करता था कि सब से उत्तम व अमूल्य पढ़ना वह है कि जिस में चित्त ऐसा एकाग्र होगया हो कि यह प्रतीत होवे कि आज अन्य दिनों की अपेक्षा भोजन का समय दो घण्टे पहिले ही आ गया है।

चार्ल्स डिकंस का कथन है कि पढ़नेमें व किसी अन्य काम के करने में सब से अधिक लाभ दायक, निष्कंटक, विश्वास-नीय और प्राप्त करने के योग्य गुण एकाग्र चित्तता है। वह कहता था कि मेरा निजी ध्यान आविष्कार जो कुछ कि यह है, मैं आप को विश्वास दिलाता हूँ कभी काम नहीं आता यदि मुझ में एकाग्र चित्तता नहीं होती। एक समय जब उसे

पूछा गया कि तुम्हारे ऐसी विलक्षण उत्तीर्णता पाने का रहस्य क्या है ? तो उसने उत्तर दिया मैंने कभी उस काम में जिस में कि मैं अपना सारा शरीर लगा सकता हूँ एक हाथ नहीं लगाया। जौज़फ गर्नी ने अपने पुत्र को लिखा था कि प्रत्येक कार्य्य में जिसे तुम करते हो पूर्ण मनुष्य होकर अर्थात् पूरे तौर पर लगो। पढ़ने में, कार्य्य करने में व खेलने में कभी अधूरे व दुचिते होकर न लगो और कभी अपने लक्ष्य से जिसे तुमने अपने सामने रख लिया है कन्नी न काटो॥

चार्ल्स किंगसले कहता था कि जो कुछ मुझे करना होता था उस में ऐसा मग्न हो जाता था कि मानो उस समय के लिए मैं संसार में हूँ ही नहीं। सम्पूर्ण बड़े २ काम करने वालों का यही रहस्य है॥

बहुतसे मनुष्य अपने आपको बड़े बनाने में इस लिए समर्थ नहीं होते क्योंकि वे अपने आप को छोटे २ भागों में विभाजित कर लेते हैं। वे प्रत्येक काम में अधूरे और अधकचरे होते हैं परन्तु किसी में भी पूरे व मास्टर नहीं होते॥

एक पश्चिमी विद्वान् लिटन का कथन है, सांसारिक कार्य्यों में इस प्रकार लुप्त देख कर और यह समझ कर कि मानो मैं कभी विद्यार्थी रहा ही नहीं हूँ लोग मुझ से कहा करते थे "तुम्हें इतनी सारी पुस्तकों के लिखने के लिए समय कहां से मिल जाता है। इस भूमि पर ही तुम इतना काम

किस प्रकार कर लेते हो"। उस जवाब को सुन कर जो कि मैं उन्हें देता था तुम अचम्भा करोगे उत्तर यह था—मैं एक समय पर अति काम न करने से ही इतना करने के योग्य होता हूँ। किसी काम में सफलता प्राप्त करने के लिए मनुष्य को अपने आपको थका न डालना चाहिए। यदि वह आज अधिक काम करता है तो इस के बदले में दूसरे दिन थकावट उस के ऊपर सवार होगी और कल वह कुछ भी न कर सकेगा। चूँ कि मैंने गम्भीर और एकाग्र मन से उत्साह पूर्वक अपने विद्याध्ययन को आरम्भ किया था, जो केवल कालेज में ही समाप्त नहीं हो गई, बल्कि वस्तुतः अब भी संसार में है। शायद मैं यह भी कह सकता हूँ कि मैं किसी सामयिक सहपाठी से न्यून स्वाध्याय नहीं रखता। मैं देशाटन करता हूँ। मैं ने राजनैतिक व अन्य सभाओं और समाजों में भी भाग लिया है। बहुत कुछ देखा और अनुभव भी किया है। परन्तु इस पर भी साठ बड़े २ ग्रँथ रचे और अन्य अन्वेषण भी किए हैं फिर बताइए कि आप की सम्मति के अनुसार मैं लिखने और पढ़ने में कितना समय व्यय करता हूँ। मैंने दिन भर में कभी तीन घंटे से अधिक समय पढ़ने व लिखने में नहीं लगाया तिस पर भी जब कभी राज-सभा (पार्लीयमेंट) लगती है तब मैं इतना भी नहीं लगाता था। परंतु उन तीन घँटों में, मैं जिस पुस्तक को पढ़ने के लिए

उठाता था उसी में मग्न हो जाता था। बस केवल इस एकाग्रचित्तता ने ही मुझे ऐसा बना दिया है।

महाशय कौलरिज में एक अद्भुत मानसिक शक्ति थी परंतु उन के सामने कोई विशेष लक्ष्य नहीं था वह सदैव मानसिक छिन्न भिन्नताओं में लगा रहता था और इसी में उसकी सारी शक्ति नष्ट हो गई और इसी ने उस का सारा मस्तिक चाट लिया, परिणाम यह हुआ कि उसका जीवन प्रायः दुर्भाग्य में ही पड़ा रहा और स्वप्न और विचारों में ही सड़ कर मृत्यु-लोक को सिधार गया। वह सदैव कल्पनायें और संकल्प ही बांधता रहा और आज उस के मरने के पश्चात् भी वह वैसे के वैसे ही पड़े हैं। वह सदैव कुछ न कुछ करने के ही लगभग होता था परन्तु उसने कभी कुछ भी नहीं किया। उसने आध्यात्मिक और परमात्मिक विषयों पर चालीस सहस्त्र से अधिक निबन्ध लिखे पर उन में से कोई भी पूरा नहीं है, सब अधूरे पड़े हैं।

एक चित्रकार अपने ध्यान को उस पदार्थ पर जिस का उसे चित्र (Photo) लेना होता था ऐसा आकर्षित करता था कि मानो वह उस पदार्थ को फिर कभी देखेगा ही नहीं। इस एकाग्र चित्तता का स्वभाव उस में ऐसा परिपूर्ण हो गया था कि उस के काम में एक अद्भुत चमत्कार दिखाई देने लगा। उस के प्रत्येक काम में उस समय के विचारों का ढंग

जिस में कि वह रहता था झलकता व टपकता था परिणाम यह हुआ कि वह शीघ्र ही चारों ओर प्रसिद्ध हो गया। वह कोई बड़ा भारी विद्वान् व योग्य पुरुष नहीं था किन्तु केवल एकाग्र चित्त-दर्शक था।

संसार में विजय व सफलता को दिखाने वाली केवल एकाग्र चित्तता ही है। एक, न कि बहुत ही प्रत्येक का आदर्श वाक्य होना चाहिए।

यह सुई का नौकीला और पतला सिरा ही है यह उस्तरा व कुल्हाड़ी की पैनी और तेज़ धार ही है जो आगे काम के लिए मार्ग खोलती है। यदि सुई में नौकीला सिरा, और कुल्हाड़ी में धार न हो तो सारे काम निकम्मे पड़े रह जाते हैं, ठीक इसी प्रकार मनुष्य के पास भी एकाग्र चित्तता रूपी तेज़ धार है जो मार्ग में आई हुई सारी रुकावटों को काट छांट कर देती है और अनुपम उत्तीर्णता को प्राप्त कराती है।

इस बात को कोई भी नहीं पूछता कि तुम कौन हो, कहां से आए हो, तुम्हारे माता पिता कौन हैं, किस कालेज में तुम ने शिक्षा पाई है परन्तु बड़ा प्रश्न तो यह है कि तुम क्या कर सकते हो। यही एक शिक्षा है जो विशेष कर चाही जाती है बड़े कार्य्यालयों के स्वामी और बड़े २ जातीय नेता छोटे पदों से ही उच्च पदों पर पहुँचे हैं॥

पढ़ने में, लिखने में, उत्तीर्णता प्राप्त करने में अथवा किसी अन्य उच्च कार्य्य के करने में एकाग्र चित्तता का एक विशेष भाग है। सँसार में आज तक जितनी सफलताएँ प्राप्त हैं इन सब में एकाग्र शक्ति का सदैव प्रादुर्भाव रहा है।

रसज्ञ (Chemsti) बतलाते हैं कि एक एकड़ घास में सारे सँसार के भाप से चलने वाली गाड़ियों और गोलों के (millas) चलाने के लिए काफी शक्ति है यदि हम उस को इंजन के पिस्टोन के एक स्थान पर (Rod of piston) लगा सकें, परन्तु यह शक्ति प्रादुर्भाव में हमारे सामने नहीं इस लिए वैज्ञानिक जगत में इसका कुछ भी मूल्य नहीं है॥

एक विद्वान् का कथन है कि जो मनुष्य बहुत से कामों में लग जाता है वह तुरंत ही अपनी शक्तियों को खो बैठता है और फिर इस शक्तियों के साथ उसका उत्साह भी चला जाता है॥

कभी कल्पनायें और कोरी बातों के गोरखधँधे में मत पड़ो, यह व्यर्थ हैं। एक उपाय सोच लो, एक लक्ष्य सामने रख लो, फिर उसपर कार्य्य करो और उस विषय की सम्पूर्ण सामिग्री इकठ्ठी कर लो, अवश्यमेव विजय व सफलता तुम्हारी है॥

किसी लक्ष्य का दृढ़ संकल्प ही सब सच्ची कलाओं का लक्षण है, वह सब से बड़ा चित्रकार नहीं है जो एक ही चित्र में सम्पूर्ण भावों को रख देता है और उन में से प्रत्येक को बराबर आसन देता है। परंतु सच्चा चित्रकार वह है जो बहुत सी भिन्नताओं को भी एकता करके दिखलाता है जो मुख्य मूर्ति में नायक भाव का प्रादुर्भाव करता है और अन्य छोटी २ मूर्तियों और रंगों आदि को उसी केन्द्र की ओर आकर्षित और आलक्ष्य करता है। ठीक इसी प्रकार एक उच्च जीवन में चाहे कई भाव और कार्य्य दृष्टि गोचर होते हों परंतु उस में एक महानादर्श व लक्ष्य होता है और यह सम्पूर्ण कार्य्य और भाव उसी आदर्श की पूर्ति में लगे होते हैं।

इसी भांति प्रकृति माता में भी प्रत्येक पत्ता, प्रत्येक फूल, प्रत्येक फल, प्रत्येक जीव, प्रत्येक परिमाणु भिन्न २ आदर्शों को लिए हुए प्रतीत होता है परन्तु ये सब पदार्थ सृष्टि रचना के अद्भुत आदर्श "मनुष्य" की ओर निर्दिष्ट करते हैं।

नवयुवकों से प्रायः यह कहा जाता है कि तुम उच्च आदर्श को सामने रक्खो। परन्तु हमें सदैव उसी आदर्श को अपने लक्ष्य में रखना चाहिए जिसे हम कर सकते हैं। एक सर्व साधारण उद्देश्य ही समुचित नहीं है।

धनुष से छोड़ा हुआ तीर इधर उधर नहीं भटकता, किंतु सीधा निशाने पर जाकर लगता, है चुम्बक की सुई

आकाश के प्रत्येक नक्षत्र की ओर यह देखने के लिए कि किसे यह पसंद करती है निर्दिष्ट नहीं करती, वे सब उसको खींचते हैं, सूर्य इस की ओर तिलमिलाता है, पुँछल तारा स्वागत करता है और नक्षत्र जगमगाते और उसका प्रेम आकर्षित करना चाहते हैं। परन्तु वह सुई अपनी प्रकृति व नियम में सच्ची है और एक अँगुली से चाहे वह धूप में हो वा छाया में हो कभी गलती नहीं करती, सदैव ध्रुव तारा की ओर ही निर्दिष्ट करती रहती है क्योंकि अन्य सम्पूर्ण तारे अपनी परिधि में सदैव परिक्रमा दिया करेंगे परन्तु अकेला ध्रुव तारा मनुष्य के सम्पूर्ण व्यवहारों के लिए एक दिन नहीं, दो दिन नहीं, किंतु शताब्दियों तक स्थिर रहता है।

ठीक इसी प्रकार जीवन के मार्ग में बहुत से नक्षत्र हमें अपने आदर्श से जो कि सच्चा धर्म-मार्ग है हटाने के लिए स्वागत करेंगे परन्तु कभी चन्द्रमा भी जो दूसरों के प्रकाश से प्रकाशित होता है और नक्षत्र जो रात में जगमगाते हैं हमारी लक्ष्य रूपी चुम्बक की सुई के आशा रूपी ध्रुव तारे की ओर निर्दिष्ट करने से हटा न पावें॥

जो मनुष्य इस संसार में एकाग्र चित्त से अपने एक ही निश्चित आदर्श व लक्ष्य की ओर जाने के लिए तन मन धन से प्रयत्न नहीं करते और चारों ओर हाथ फैंकते हैं कभी

नाम यश, आनंद और मंगल को प्राप्त नहीं कर सकते। क्योंकि—

एक हि साधे सब सधें, सब साधे सब जाय ॥

इति शुभम्।

बाबू शिवव्रत लाल वर्म्मन लिखित शाही माला के सचित्र उपन्यास

शाही लकड़हारा—प्रारब्ध की विचित्र गति देखनी हो तो इस पुस्तक को पढ़ो, राजा का पुत्र काल की गति से किस प्रकार लकड़हारे का काम करता हुआ सैकड़ों प्रकार के कष्ट सहता है और कैसे फिर राज सिंहासन पर बैठता है, ऐसी मनोरंजक और करुणा-रस से भरी हुई पुस्तक आज तक इस के जोड़ की दूसरी नहीं बनी। निर्धनता से पीड़ित और दुःखी गृहस्थों को यह पुस्तक एक हितैषी मित्र के समान धीर बँधाती है। सच पूछो तो इस पुस्तक को उपन्यास कहना ही भूल है। प्रारब्ध के जटिल प्रश्न की समस्या करने में तो यह पुस्तक एक शास्त्र कही जा सकती है, रोचक ऐसी है कि एक बार इस के पहिले पृष्ठ को पढ़लो, और फिर यदि समाप्त किए बिना रोटी खालो तो मूल्य वापिस। भाषा बड़ी ही सरल और सरस है, स्त्रियों और पुरुषों दोनों ही के लिए शिक्षा-दायक है; स्थान स्थान पर रंगीन चित्रों से सुसज्जित है। मूल्य २), रंगीन २।), रेशमी जिल्द २॥)

शाही डाकू—सम्राट के साथ एक छोटी सी राजपूत रियासत का तुमुल युद्ध, इस पुस्तक में रायदेवा नाम के एक

छोटे से राजपूत नरेश की वीरता, नीति-निपुणता, जासूसी और चातुर्य्य का वर्णन किया गया है। दिल्ली-पति मुगल सम्राट के राज्य में इस ने अनेक भीषण डाके डाल कर इस ने सम्राट को नाकों चने चबाए थे। रायदेवा की वीरता का साखा पढ़ कर कायर भी एक बार फड़कने लगते हैं, इस की जासूसी को पढ़ कर हँसते २ लोट पोट न हो जाओ तो दाम वापिस। राजपूत स्त्रियों का पतिव्रत धर्म इस में विशेष पढ़ने के योग्य स्थल है। मुगल शासन का पूरा २ चित्र इस में दिया गया है, हिन्दू जाति पर अत्याचार, उनके धर्म पर कुठार, यह लोग किन २ उपायों से करते थे, यह सब बातें यदि जानने की इच्छा है, तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए। पुस्तक बड़ी ही रोचक है।

मूल्य १॥), रंगीन जिल्द १।॥), रेशमी जिल्द २)

शाही भिखारी—यथा नाम तथा गुण, कहां शाह और कहां भिखारी, कहां राजा भोज और कहां गंगा तेली। परन्तु परमात्मा का संकल्प और दैव-गति नहीं जाती। इस पुस्तक में एक राजकुमार और एक राजकुमारी का वर्णन है, जो दोनों ही राजाओं के घर में जन्म लेकर भी भीख मांग २ कर उदर-पूर्ति करते थे, परन्तु ईश्वर ने किस प्रकार उनकी विपत्ति के दिन पूरे करके दो बार राज्य-सिंहासन पर बैठाया। ग्रह गति को जो लोग नहीं मानते, उनके लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़ने योग्य, ग्रह-गति विषयक सारी शंकाएं अत्युत्तम युक्तियों द्वारा इस में दूर कर दी गई हैं। पुस्तक अति रोचक और भाव-पूर्ण

है। स्त्री और पुरुष दोनों के लिए लाभदायक है । सुन्दर रंगीन चित्र सहित है। मूल्य १॥)

शाही जादूगरनी—इस में एक आसाम की रानी का वर्णन है, जो कि जादू से काम लेती थी और जिसका जादू इस पुस्तक के पढ़ने ही से प्रतीत हो सकता है । यह पुस्तक उपन्यास के रूप में लिखी गई है। अपने ढंग का यही एक पहिला उपन्यास है, जिस को पढ़ कर पतित स्त्रियों के चरित्र से बड़ी शिक्षा मिलती है और पाप-पूर्ण जीवन से घृणा होने लगती है। यदि आप त्रिया-चरित्र का पूरा २ हाल जानना चाहते हैं, तो इस उपन्यास को अवश्य पढ़िए । मूल्य १॥) सजिल्द २)

शाही पतिपरायण—यह पुस्तक स्त्रियों के लिए बहुत ही शिक्षादायक और उपयोगी है । इस के पढ़ने से पति-प्रेम और भक्ति का एक सच्चा और मनोहर उपदेश मिलता है। इस में वर्णन की हुई कथा झूठ नहीं है, असली है । इस में गुजरात देश की एक रानी की जोशीली कहानी दी गई है। जिस से पतिव्रत-धर्म्म का एक अद्भुत दृश्य सामने आ जाता है, और यह पुस्तक इस प्रकार दर्दनाक है कि पढ़ते २ नेत्रों से नीर बह जाता है। मूल्य ॥=) सजिल्द १)

शाही चोर—एक छोटा सा, परन्तु अति शिक्षा-प्रद व उपयोगी उपन्यास हरिद्वार के निकट कनखल गांव की एक पुरानी, लेकिन सच्ची कथा दी गई है। मूल्य ।)